CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

11·3

हमारा देश हमारी एकता

डा० राधाकृष्ण शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

th, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundati

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

हमरा देश, हमारी एकता

—★—

लेखक

डा० राधाकृष्ण शर्मा, एम.ए.,पी-एच.डी. विद्यासागर,

बिहार राष्ट्रभाषा ग्रंथ पुरस्कार प्राप्त, पटना

स्वामी सहजानन्द समाज सेवा पुरस्कार प्राप्त, नई दिल्ली

सूचना एवं प्र सारण मंत्रालय

निबन्ध प्रतियो गिता पुरस्कार प्राप्त, नई दिल्ली

१९९८ ई.

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रकाशक :
शर्मा पुस्तक मंदिर
मोहन नगर, छपरा (बिहार)

मूल्य : १४.००

मुद्रक :
श्री दुर्गा प्रिन्टर्स
सलेमपुर छपरा ।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

प्राक्कथन

'हमारा देश, हमारी एकता' नामक पुस्तक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए लेखक को अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस पुस्तक के पढ़ने से देश के इतिहास के सम्बन्ध में जानकारी होती है। यह भी जानकारी होती है कि देश की अनेकता में एकता पूर्ण निहित थी। इन दिनों राष्ट्रीय एकता के मार्ग में क्यों और कैसे कुछ बाधाएँ पैदा हो गई हैं और उनका निराकरण क्यों और कैसे किया जा सकता है!

पुस्तक सरल भाषा एवं सुबोध शैली में लिखी गई है।

प्रत्येक नागरिक के लिए ऐसी पुस्तक का अध्ययन अपेक्षित ही नहीं, आवश्यक भी है। इसके अध्ययन से निश्चय ही वे लाभान्वित होंगे और राष्ट्र की भावात्मक एकता को प्रोत्साहन मिलेगा।

उर्मिला-कृष्ण भवन
मोहन नगर
छपरा (बिहार)

राधा कृष्ण शर्मा

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

समर्पण

पूजनीया माता जिनका १४ सितम्बर १९८१ ई० (सोमवार) को स्वर्गवास हो गया, के चरण-कमलों में सादर समर्पित !

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एकता का महत्व

संगठन में बहुत शक्ति है लेकिन विभाजन में कमजोरी है। कहा जाता है कि संगठित होने पर हम ठीक से खड़े रह सकते हैं किन्तु विभाजित होने पर हम गिर पड़ते हैं। बात बिलकुल सही है। जहाँ एकता है वहीं बल है, वहीं उन्नति है और जहाँ फूट है वहीं दुर्बलता है, वहीं अवनति है। महात्मा तुलसीदास का भी कथन है कि "जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना, जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति बखाना।" इसका यह मतलब है कि जहाँ लोगों में एकमत है—एकता है वहाँ धन बढ़ता है, दौलत बढ़ती है लेकिन जहाँ एकमत नहीं है—जहाँ मतभेद है वहाँ अनेक दुख देखने को मिलते हैं। हम अपने चारों तरफ यह बात देखते हैं।

एकता का मीठा फल :

एक गाँव में दो भाई रहते थे—रामू और सामू। रामू को चार लड़के थे—मदन, सदन, बदन और कुदन। सामू को भी चार लड़के थे—किसुन, विसुन, सोहन और मोहन। रामू और सामू दोनों ही बहुत बूढ़े हो गये थे। रामू ६५ वर्ष के और सामू ६० वर्ष के हो गये थे। एक दिन रामू ने अपने लड़कों को झगड़ते हुए देखा। उसने सबों को अपने सामने बुलाया। उसने अपने प्रत्येक लड़के को एक-एक छड़ी देकर तोड़ने के लिए कहा। प्रत्येक लड़के ने छड़ी को बड़ी आसानी से तोड़ दिया। उसके बाद उसने चार छड़ियों को एक साथ बाँध दिया और तब फिर अपने लड़कों को तोड़ने के लिए कहा। प्रत्येक लड़के ने बड़ी कोशिश की किन्तु एक साथ बाँधी हुई छड़ियाँ नहीं टूट सकीं। तब रामू ने अपने पुत्रों से कहा—"देखो बेटा, एकता में कितना बल है। छड़ियाँ जब अलग-अलग थीं तो एक-एक कर टूट गयीं। लेकिन जब वे एक साथ हो गईं तो वे टूट नहीं सकीं। इन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

छड़ियों की तरह यदि एक साथ मिलकर रहोगे तो तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा और तुम्हारी बराबर उन्नति होती रहेगी। किन्तु यदि अलग-अलग हो गये तो तुम्हारा पतन हो जाएगा। लोग तुम पर हँसेंगे और तुम्हारी निन्दा करेंगे।" सभी लड़कों ने मिलकर प्रतिज्ञा की—"पिताजी, हमलोग बराबर मिलकर रहेंगे, कभी भी अलग नहीं होंगे।" यह सुनकर रामू बड़ा खुश हुआ।

कुछ ही दिनों के बाद रामू मर गया। उसके सभी लड़के मिलकर एक साथ रहने लगे। एक दिन उसके घर में एक चोर घुस गया। सबों ने मिल कर चोर को मार डाला। फिर कभी किसी चोर की हिम्मत नहीं हुई कि उनके घर में चोरी करने के लिये जाय।

इस तरह रामू के सभी लड़के मिलकर उन्नति करते रहे और वे अपना जीवन सुख और शांति के साथ बिताते रहे। सचमुच एकता का फल बड़ा ही मीठा होता है।

फूट का तीता फल :

सामू ने अपने लड़कों को रामू के जैसा कोई उपदेश नहीं दिया। सामू भी कुछ दिनों में मर गया। उसके चारों लड़कों में राय नहीं थी। वे आपस में झगड़ते रहते थे। वे मार-पीट भी करते रहते थे।

सामू के मरने के बाद उसके चारों लड़के अलग-अलग भी हो गये। चारों लड़कों ने अपनी अलग झोपड़ी बना ली। एक दिन किसुन के घर में एक चोर घुस गया। चोर ने उसे मारपीट कर उसका सब सामान छीन लिया। अन्य तीन भाइयों ने किसुन की सहायता नहीं की। इसी तरह बारी-बारी से अन्य तीन भाइयों की भी यही दशा हुई। सामू के मरने के बाद एक ही साल के अन्दर चारों भाइयों का नाश हो गया। वे बिना घर के हो गये और जहाँ-तहाँ भीख माँगने लगे। सचमुच ही फूट का फल बड़ा ही तीता होता है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जो बात हम छोटे पैमाने पर परिवार के साथ देखते हैं वही बात बड़े पैमाने पर हम देश या राष्ट्र के साथ देखते हैं। जिस देश के लोग मिल जुल कर काम करते हैं वे तो आगे बढ़ते हैं, ऊपर चढ़ते हैं। उनकी उन्नति होती है। किन्तु जिस देश के लोग मिलजुल कर काम नहीं करते हैं वे पीछे की ओर जाते हैं। उनकी अवनति होती है। वे नीचे की ओर गिरते हैं। शक्तिशाली देश के लोग उन्हें दबाते हैं—डराते-धमकाते हैं। बलवान देश के लोग कमजोर देश के लोगों को अपना गुलाम भी बना लेते हैं। फिर गुलामी में तो सुख मिल ही नहीं सकता। महात्मा तुलसीदास जी तो बहुत ठीक कहते हैं कि गुलाम को सपना में भी सुख नहीं मिल सकता है—'पराधीन सपने सुख नाहीं।'

सच्ची एकता जरूरी :

इसलिए प्रत्येक देश के लोगों में एकता होनी चाहिए, संगठन होना चाहिए। अपनी अलग-अलग डफली नहीं बजानी चाहिए—अलग-अलग राग नहीं अलापना चाहिए। एक साथ मिलकर डफली बजानी चाहिये—एक साथ मिलकर राग निकालना चाहिए। एक आदमी की आवाज बहुत कम लोग सुन सकते हैं किन्तु दस-बीस आदमियों की आवाज बहुत दूर तक सुनाई पड़ेगी। यह एकता दिखलाने के लिये नहीं होनी चाहिए—ऊपर से नहीं होनी चाहिए। एकता सच्ची होनी चाहिए। यह दिल और दिमाग दोनों में होनी चाहिए। यदि एकता मुख में है, दिल और दिमाग में नहीं है तो यह एकता झूठी है—नकली है। परीक्षा का समय आने पर इसकी असफलता तुरन्त मालूम हो जायेगी। जो व्यक्ति ऐसी झूठी एकता का प्रचार करता है वह 'हाथ में सुमिरनी, बगल में छुरी' वाली कहावत को लागू करता है। जो व्यक्ति हाथ में माला जपता है किन्तु समाज में बुराई करने के लिए छुरी छिपाये रखता है उस पर कोई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विश्वास नहीं करता—उसे लोग कपटी कहते हैं। आजकल तो उसे 'चार सौ बीस' कहते हैं। ऐसे ही जो व्यक्ति ऊपर से एकता की बात कहता है किन्तु अपने काम से उसमें बाधा डालता है वह भी धोखा-बाज है। इसलिए मनुष्य को अपना आचरण ऐसा बनाना चाहिए कि जो कहा जाय सो किया भी जाय और जो किया जाय सो ही कहा भी जाय। इस तरह कथनी और करनी, सिद्धांत और व्यवहार, दोनों एक समान होना चाहिए।

हमारा देश :

हमारा देश भारतवर्ष है। इसे हिन्द या हिन्दुस्तान भी कहते हैं। बहुत पहले इसे आर्यावर्त, जम्बू द्वीप कहते थे। अंगरेजी में इसे ही 'इंडिया' कहते हैं। हमारा यह देश बड़ा ही अनोखा है। संसार के अनेक देशों से यह विचित्र देश है। हमारे देश का एक कवि तो कहता है "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" यानी दुनिया के सभी देशों से हमारा यह हिन्दुस्तान अच्छा है। यह बात कई माने में सही है।

भारत एक विशाल देश है। इसीलिये इसे महादेश भी कहते हैं। इसमें अभी करोड़ों लोग रहते हैं। इनकी अनेक बोलियाँ हैं। इनकी बहुत-सी भाषाएँ हैं। देश के संविधान में चौदह भाषाओं का उल्लेख किया गया है। यहाँ सभी धर्म के लोग भी पाये जाते हैं—हिन्दू, पारसी, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई, मुसलमान आदि। यहाँ के लोग भी रंग-विरंग के होते हैं—काला, साँवला, गोरा। लोगों के खान-पान, पहनावे, शिक्षा में भी भिन्नता है। पूरबी भारत के लोग चावल अधिक खाते हैं तो पश्चिमी भारत के लोग गेहूँ का अधिक उपयोग करते हैं। कहीं के लोग धोती-कुर्त्ता का व्यवहार करते हैं तो कहीं के लोग लुंगी, पायजामा, कमीज का व्यवहार करते हैं। कहीं के लोग टोपी पहनते हैं तो कहीं के लोग पगड़ी बाँधते हैं। स्त्रियों में कहीं परदा है तो कहीं बिलकुल ही नहीं है। यहाँ की जमीन भी कहीं

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

खूब उपजाऊ है तो कहीं एकदम ऊसर है। उपजाऊ भूमि में अन्न का ढेर लग जाता है लेकिन ऊसर भूमि में तो कुछ पैदा ही नहीं होता। जमीन में कहीं मैदान देखते हैं तो कहीं पहाड़ भी देखते हैं। कहीं मरूभूमि भी दीख पड़ती है। ऐसे ही वर्षा भी कहीं खूब होती है तो कहीं बहुत ही कम होती है। यहाँ हरेक तरह की फसल होती है। यहाँ की भूमि खनिज पदार्थों से भी भरी हुई है। लोहा, कोयला, तांवा, सोना, चांदी आदि सभी बहुमूल्य चीजें मिलती हैं। यहाँ हर तरह की लकड़ी और हर तरह के पशु-पक्षी भी मिलते हैं। यहाँ अनेक प्रकार के पेशे भी होते हैं।

इस तरह हमारा देश एक अजायब-घर या जादू-घर के समान है जिसमें हर चीज का नमूना पाया जाता है।

भारत के उत्तर में हिमालय पहाड़ है। यह बहुत लम्बा, ऊँचा और चौड़ा पहाड़ है। इसी पहाड़ पर हमारे अनेक देवी-देवता रहते हैं। इस पहाड़ के होने से भारत को बहुत लाभ हुए हैं। यह उत्तर से देश की रक्षा करता है। इसीके चलते भारत में वर्षा होती है। पैदावार होता है। कई नदियाँ भी वहीं से निकलती हैं। हमारी नदियों में गंगा नदी बहुत ही प्रसिद्ध है। इसका जल बड़ा ही पवित्र माना जाता है। इस नदी के किनारे बहुत से अच्छे-अच्छे नगर और तीर्थ स्थान भी कायम हो गये हैं। काशी गंगा नदी के ही किनारे पर है। इसे ही बनारस या वाराणसी भी कहते हैं। यहाँ बड़े-बड़े पंडित हुए हैं। लोग काशी में मर जाना अच्छा समझते हैं। गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर इलाहाबाद है। इसे प्रयाग भी कहते हैं। संगम पर बहुत लोग स्नान करते हैं। उत्तरी भारत में ही दिल्ली है। दिल्ली बहुत समय से ही भारत की राजधानी रही है।

भारत पूर्व, पश्चिम और दक्षिण—तीन ओर समुद्र से घिरा हुआ है। देश के भीतर भी कई छोटे-मोटे पहाड़ हैं। कई नदियाँ भी बहती हैं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भारत के निवासी :

बहुत पहले पुराने समय में यहाँ लोग आर्य कहलाते थे। ये लोग कहीं बाहर से आकर यहाँ बस गये। आर्य का मतलब होता है सबसे अच्छा (श्रेष्ठ)। इनके पहले यहाँ जो लोग थे वे अनार्य कहलाने लगे। इन्हें द्रविड़ भी कहते थे। ये लोग आर्य से कुछ नीचे दर्जे का माने जाते थे। बाद में ये दोनों आपस में मिलजुल गये। तब इनको हिन्दू कहा जाने लगा। हिन्दू लोग कुछ और दूसरी जातियों को भी अपने में मिला लिये।

रहन-सहन :

प्राचीन समय में भारत के लोगों का रहन-सहन बड़ा अच्छा था। आज से करीब ५-६ हजार वर्ष पहले की बात है। सिन्धु नदी की घाटी में लोग बहुत ही अच्छे ढंग से रहते थे। वे आर्य नहीं थे। लेकिन उनकी सभ्यता अच्छी थी। वे नगरों में रहते थे। वे सफाई पर पूरा ध्यान देते थे। हड़प्पा और महेंनजोदरो उनके प्रमुख नगर थे। उसके बाद उस सभ्यता का विकास होता रहा। हिन्दू लोग उस सभ्यता को आगे बढ़ाते रहे। हिन्दुओं ने जीवन के सभी क्षेत्रों में बड़ी उन्नति की। वे अपने रहने के लिए अच्छा मकान बनाते थे। मकानों में धूप और हवा का प्रबन्ध रहता था। गन्दा पानी निकलने के लिए नालियाँ बनती थीं।

राजाओं के मकान को तो देखकर लोग अचरज करते थे। राजा अशोक का मकान बड़ा ही सुन्दर था। इसे देखकर विदेशी लोग भी दंग रह जाते थे। मकान और महल के अलावा भारत में मंदिर भी खूब बनते थे। समूचा देश मंदिरों से भरा हुआ है। लोग बहुत धार्मिक हुआ करते थे। वे मंदिरों में देवी-देवताओं की मूर्त्तियों की पूजा करते थे। उनके देवी-देवता बहुत थे—हजारों थे। लोग मूर्ति और चित्र भी बनाने में बहुत चतुर थे। उस समय की बहुत मूर्त्तियाँ

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

और चित्र मिलते हैं। दक्खिनी भारत में अजन्ता और एलोरा चित्र के लिए प्रसिद्ध हैं।

समाज का विभाजन :

समाज काम के आधार पर चार भागों में बँट गया था—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण का काम था पढ़ना-लिखना, क्षत्री का काम था लड़ाई-भिड़ाई करना, वैश्य का खेती-बारी करना और शूद्र का सेवा-टहल करना। इसे वर्ण कहा जाता था। बाद में इसे ही जाति कहा जाने लगा।

जीवन का विभाजन :

मनुष्य का जीवन भी चार भागों में बँटा था—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, सन्यास और वाणप्रस्थ। इसे आश्रम कहते थे। मनुष्य की औसत आयु एक सौ वर्ष की मानी जाती थी। २५ वर्षों तक मनुष्यों को प्रत्येक आश्रम में अपनी आयु बितानी पड़ती थी।

नारी :

प्राचीन भारत में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। वे शिक्षित होती थीं। समाज में उनका खूब आदर होता था। उस समय परदा की प्रथा नहीं थी। वे पुरुषों की बराबरी में बैठती थीं। पुरुषों में विद्वान पाये जाते थे तो स्त्रियों में विदुषी होती थीं। स्त्रियाँ पुरुषों से वाद-विवाद भी करती थीं। कुछ स्त्रियों ने वेद के मन्त्रों की भी रचना की थी। उन्हें विवाह करने में भी स्वतन्त्रता थी। उस समय बाल-विवाह, दहेज-प्रथा जैसी बुरी प्रथाओं का भी अभाव था। नारी-जन्म परिवार के लिए दुख या चिन्ता का विषय नहीं था।

शिक्षा :

प्राचीन भारत के लोग पढ़ने-लिखने में बहुत आगे बढ़े हुए थे। विद्या की खूब उन्नति हुई थी। वेद, उपनिषद् और दर्शन लिखे गये।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaor

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इनमें बहुत ही उच्च विचार पाये जाते हैं। वेद चार थे—रीग्वेद (ऋग्वेद), यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनमें ऋग्वेद बहुत पुराना है। दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं—रामायण और महाभारत। रामायण में रामजी और सीता जी की कथा है। रामजी अयोध्या के राजा थे और सीता जी उनकी रानी थी। लंका का राजा रावण था। वह बड़ा लालची और बदमाश था। उसने एक बार धोखा देकर सीता जी को चुरा लिया था। इसलिये रामजी के साथ लड़ाई हो गई। रामजी ने रावण को मार दिया और लंका को तहस-नहस कर दिया।

महाभारत में कौरवों और पांडवों की लड़ाई का वर्णन है। यह भाई-भाई की लड़ाई थी। कौरव और पांडव में मेल नहीं था। कुरूक्षेत्र के मैदान में लड़ाई हुई। १८ दिनों तक लड़ाई हुई। भगवान श्रीकृष्ण ने पांडवों का साथ दिया। लड़ाई में बहुत लोग मारे गये। कौरव हार गये और पांडव जीत गये। लेकिन पांडव खुशी और शांति से नहीं रह सके। लड़ाई में भाई-भतीजों, सगे-सम्बन्धियों के मरने से उन्हें बड़ा दुख हुआ। उन्हें भी बहुत कष्ट झेलने पड़े। कोई किसी को हराकर या मारकर सुखी नहीं हो सकता है।

बाल्मीकि ने रामायण लिखा। व्यास जी ने महाभारत लिखा। गीता महाभारत का ही एक भाग है। गीता में श्रीकृष्ण भगवान का सन्देश है। गीता के पढ़ने से वड़ा लाभ होता है। महात्मा गाँधी गीता को अपनी माँ के समान समझते थे। संकट के समय गीता से उन्हें शाति मिलती थी। महात्मा तुलसीदास जी ने भी रामायण को हिन्दी में लिखा है। यह बहुत ही लोकप्रिय ग्रन्थ है। हिन्दुओं के घर-घर में रामायण पाया जाता है। पुराण भी प्रसिद्ध पुस्तक है। उनकी संख्या १८ है।

संस्कृत :

प्राचीन भारत में संस्कृत भाषा का खूब विकास हुआ। इस भाषा

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

में बहुत-सी पुस्तकें लिखी गईं। यूरोप में ग्रीक और लैटीन पुरानी भाषाएँ थीं किन्तु संस्कृत ग्रीक और लैटीन से भी अधिक पुरानी भाषा है। प्राचीन भारत में बहुत से विद्वान हुए थे। कालिदास का नाम संसार-भर में प्रसिद्ध था। उन्होंने संस्कृत में बहुत किताबों की रचना की। उन रचनाओं में शकुन्तला सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इसमें दुष्यन्त और शकुन्तला की कहानी है।

आर्यभट्ट भी बहुत बड़े विद्वान थे। उन्हें गणित और ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था। अन्य विषयों के भी विद्वान पाये जाते थे।

नालन्दा विश्वविद्यालय :

यहाँ बहुत से विश्वविद्यालय भी कायम हुए थे। उनमें नालन्दा का विश्वविद्यालय बड़ा ही प्रसिद्ध था। वहाँ दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे और सैकड़ों पढ़ाने वाले शिक्षक थे। भारत के बाहर से भी यहाँ लोग पढ़ने के लिए आते थे। उस समय सारी दुनिया में ऐसा विश्व-विद्यालय नहीं था। नालन्दा पटना जिले के अन्दर स्थित है। इस समय भी विश्वविद्यालय के बहुत चिह्न देखे जा सकते हैं। अभी भी टूटी-फूटी इमारतें पायी जाती हैं। तक्षशिला, बनारस, विक्रमशीला भी विद्या के प्रधान केन्द्र थे।

पेशा :

यहाँ कई तरह के धन्धों का प्रचार था। खेती और पशुपालन तो प्रधान व्यवसाय थे ही। मिट्टी के वर्त्तन भी बनते थे। सोने, चाँदी के गहने भी बनते थे। यहाँ से कई चीजें भी बाहर के देशों में भेजी जाती थीं। रोम में गरम मशाले भेजे जाते थे। इस तरह देश के भीतर और बाहर व्यापार खूब होता था। देश में बाहर से अधिक धन आता था। देश के लोग सुखी थे।

महाबीर और बुद्ध :

प्राचीन भारत में कई महापुरुष भी हुए। महाबीर और बुद्ध

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ने अहिंसा का प्रचार किया। अहिंसा का मतलब था किसी को कोई दुख नहीं पहुँचाना—आपस में मेल-जोल से रहना। उन लोगों ने जात-पाँत का कोई भेद-भाव नहीं रखा और सबको सबके साथ प्रेम-भाव से रहने के लिए उपदेश दिया।

महावीर ने एक धर्म चलाया। उसे जैन धर्म कहते हैं। महावीर के मरने के बाद जैन लोगों में दो दल हो गये। एक दल के लोग उजला कपड़ा पहनते थे और दूसरे दल के लोग नंगे ही रहते थे। अभी भी दोनों दल के लोग भारत में पाये जाते हैं। लेकिन दोनों दल वाले सेवा और सादगी, त्याग और तपस्या पर जोर देते हैं।

महात्मा बुद्ध तो एक राजा के लड़के थे। इनके पिता का नाम शुद्धोदन था। वे कपिलवस्तु में राजा थे। कपिलवस्तु नेपाल के निचले हिस्से में था। निचले हिस्से को तराई कहते हैं। उन्हें धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी। लेकिन उनको धन-दौलत और राज-पाट में कोई सुख नहीं मिलता था। एक दिन वे सब कुछ छोड़कर अपने राज्य से बाहर चले गये। वे साधु बनकर साधारण लोगों के बीच घूमने लगे। वे घूमते-फिरते गया में पहुँचे। यहीं पर एक वृक्ष के नीचे बैठकर सोचने-विचारने लगे। तब इनकी आँखें खुल गयीं। इन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया। इन्हें असली सुख-शांति का रास्ता मालूम हो गया।

बुद्ध का पहले का नाम सिद्धार्थ था। ज्ञान होने पर ये बुद्ध कहलाये। जिस स्थान पर ज्ञान मिला उसे बोधगया कहा जाता है। जिस पेड़ के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ उसे बोधिवृक्ष कहते हैं। महात्मा बुद्ध का उपदेश बड़ा सरल था। उन्होंने सादा जीवन, पवित्र विचार और शुद्ध हृदय पर ही जोर दिया। वे कहते थे कि बैर से बैर शांत नहीं होता, बैर मित्रता से ही शांत हो सकता है। कोई घृणा करता है तो उससे प्रेम ही करना चाहिये। कीचड़ से कीचड़ तो कभी साफ नहीं हो सकता। कीचड़ स्वच्छ जल से ही साफ हो सकता

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

है। बुद्ध ने एक सीधी बात यह बतलायी कि हम जैसा दूसरे से अपने प्रति व्यवहार चाहते हैं हमें भी दूसरे के प्रति वैसा ही व्यवहार करना चाहिये। उनके मतानुसार यदि हम चाहते हैं कि दूसरा हमारा आदर करे तो हमें भी दूसरे का आदर करना चाहिये।

बुद्ध जनता की भाषा में यानी बोल-चाल की भाषा में ही उपदेश देते थे। उनका चलाया हुआ धर्म बौद्धधर्म कहलाता है। यह धर्म लोगों को खूब पसन्द पड़ा। भारत में इसका प्रचार हुआ ही। भारत के बाहर भी कई देशों में इसका प्रचार हुआ। बर्मा, चीन, जापान तथा कई दूसरे देश बौद्धधर्म को मानने लगे थे।

विदेशी हमले :

जिस शताब्दी में महात्मा बुद्ध का उदय हुआ था उसी शताब्दी में भारत पर सबसे पहला विदेशी हमला हुआ था। फारस भारत के उत्तर-पश्चिम में एक देश है। वहीं के राजाओं ने भारत पर हमला कर दिया। भारत के कुछ छोटे हिस्सों पर उन्होंने अधिकार भी कर लिया। किन्तु वे भारत पर राज्य नहीं कर सके।

इसके करीब दो सौ वर्षों के बाद सिकन्दर ने भारत पर चढ़ाई कर दी। सिकन्दर यूनान का रहनेवाला था। वह वीर तो था ही, घमण्डी भी था। भारत में राजा पोरस के साथ उसकी लड़ाई हुई। घमासान लड़ाई हुई। पोरस तो हार गया किन्तु उसकी वीरता देखकर सिकन्दर भी अचरज में पड़ गया। उसने पोरस का राज्य लौटा दिया। अब भारत से वह अपने सैनिकों के साथ लौट चला। सिकन्दर का अहंकार खतम हो गया। उसे भारतीयों की वीरता मालूम हो गई। लेकिन भारत और यूनान में सम्पर्क हो गया। दोनों देशों में व्यापार होने लगा।

राजतन्त्र और प्रजातन्त्र :

प्राचीन भारत में राजतन्त्र और प्रजातन्त्र दोनों ही कायम थे।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

राजतन्त्र में एक राजा शासन करता था। उसके मरने के बाद उसका लड़का या उसका कोई सम्बन्धी ही गद्दी पर बैठता था। लेकिन प्रजातन्त्र में तो जनता के हाथ में शासन की बागडोर रहती थी। जनता ही कुछ समय के लिए अपने शासकों को चुनती थी। बिहार के वैशाली में प्रजातन्त्र राज्य था। प्रजातन्त्र को ही गणतन्त्र या गणराज्य भी कहते हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य :

प्राचीन भारत में बड़े-बड़े राजा भी हुए। सबसे पहले चन्द्रगुप्त का नाम आता है। वह बड़ा ही शक्तिशाली राजा था। उसने मौर्य वंश कायम किया था। वह खूब लड़ाकू था। उसने एक विदेशी राजा को हराया था। वह विदेशी राजा था—सेल्युकस। वह यूनानी था।

चन्द्रगुप्त अच्छा शासक भी था। उसने गाँव और नगर सब जगह अच्छा शासन कायम किया था। उसके राज्य में कभी चोरी नहीं होती थी। लोग ताला लगाने पर जोर नहीं देते थे। चन्द्रगुप्त का ही मन्त्री था चाणक्य। चाणक्य बड़ा ही चतुर था। वह बड़ा विद्वान भी था। उसका कौटिल्य भी नाम था। उसीने अर्थशास्त्र के नाम से एक किताब लिखी थी। यह शासन और राजनीति की किताब है। चन्द्रगुप्त ने पाटलीपुत्र को खूब सुन्दर बना दिया था। पाटलीपुत्र को ही आजकल पटना कहते हैं।

अशोक :

अशोक भी एक बहुत बड़ा राजा हुआ। उसने कलिंग में एक भारी युद्ध किया। उसमें वह जीत भी गया। लेकिन लड़ाई में बहुत लोग मारे गये। इससे उसे बड़ा दुःख हुआ। लोगों को मारकर लड़ाई जीतना उसे पसन्द नहीं पड़ा। इसलिए अब उसने युद्ध लड़ना ही छोड़ दिया। लड़ाई में हारकर तो सभी लोग लड़ाई करना छोड़

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

देते हैं। लेकिन लड़ाई जीतकर लड़ाई छोड़ देना अचरज की बात है। फिर भी अशोक ने यही किया। अब उसने बुद्ध के उपदेशों को मान लिया। अब वह लोगों में प्रेम और भाईचारे का प्रचार करने लगा। संसार में ही ऐसा कोई राजा नहीं हुआ। उसे भारत का ही नहीं, दुनिया का सबसे बड़ा राजा माना जाता है। उसका कोई दुश्मन नहीं था। उसके पहले भारत पर जो लोग हमला किये थे उसने उन लोगों की भी भलाई की। उनके राज्य में भी उसने प्रेम और शान्ति का दूत भेजा। अशोक के साथ यह कहावत लागू होती होती है कि "जो तोको काँटा बोवे, ताहि को तू बोवे फूल" यानी तुम्हारे मार्ग में जो काँटा रखे उसके मार्ग में तुम फूल रखो। अशोक ने हमें यह सिखाया कि जो दुश्मनी करे उससे भी दोस्ती ही करनी चाहिए।

अशोक ने जीव हिंसा को रोक दिया। अब मांस का खाना भी बन्द होने लगा। शिकार के लिए भी रोक लगा दी गयी। अशोक ने बौद्धधर्म की अच्छी-अच्छी बातों को पत्थरों पर लिखवा दिया। उन पत्थरों को देशभर में जहाँ-तहाँ गड़वा दिया गया। अब उन पत्थरों पर बुद्ध और अशोक के उपदेशों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी के लोग पढ़ने लगे। अशोक कहने के लिए बौद्ध था। लेकिन वह सभी धर्मों का आदर करता था। वह कहा करता था कि जो दूसरे धर्म का आदर नहीं करता है वह अपने धर्म का भी आदर नहीं कर सकता है।

अशोक ने मनुष्यों के लिए अस्पताल खोला। पशुओं के लिए भी अस्पताल खोले गये। उसने लोगों की सुविधा के लिए भी बहुत काम किये। सड़कें बनायीं गयीं। सड़कों के दोनों बगल छायादार पेड़ लगाये गये। विश्राम के लिए सरायें बनीं। जहाँ-तहाँ कुएँ बनवाये गये।

सचमुच अशोक साधारण राजा नहीं, महान् राजा था। वह साधारण मानव नहीं, महामानव था।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कोई भी राज्य सदा कायम नहीं रहता। मौर्य राज्य का भी पतन हो गया। उसके बाद कई वंश आये और गये। एक विदेशी वंश की स्थापना हुई थी। उसे कुशान वंश कहते हैं। उस वंश में कनिष्क नाम का एक महाप्रतापी राजा हुआ। उसने अपना राज्य बढ़ाया। उसने बौद्धधर्म को भी मान लिया और इसका प्रचार भी किया।

गुप्त वंश :

मौर्यवंश की तरह गुप्तवंश भी बड़ा नामी था। पहला चन्द्रगुप्त ने गुप्तवंश को कायम किया था। उसीका लड़का समुद्रगुप्त था। वह बड़ा शक्तिशाली था। उसने अपने राज्य को बहुत बढ़ाया था। उसका राज्य पंजाब से लेकर दक्खिन में नर्मदा नदी तक फैला हुआ था। वह विजेता था, साथ ही कवि और गायक भी था। वह हिन्दू धर्म मानता था। लेकिन वह दूसरे धर्म का भी आदर करता था।

समुद्रगुप्त के बाद उसका लड़का गद्दी पर बैठा। वह दूसरा चन्द्रगुप्त कहा जाता था। वह इतिहास में विक्रमादित्य के नाम से भी प्रसिद्ध है। वह भी शक्तिशाली था। उसने शक लोगों को पराजित किया था। शक लोग विदेशी थे। वह कला और विद्या का प्रेमी था। इसीके दरबार में नौ नामी विद्वान रहते थे। उन्हें नौरत्न कहते हैं। उसीके समय में चीन से एक यात्री भारत में आया था। उसका नाम फाहियान था।

हर्षवर्द्धन :

विक्रमादित्य के बाद हर्षवर्द्धन प्रसिद्ध राजा हुआ। वह वर्द्धन वंश का था। इस वंश की राजधानी थानेश्वर में थी। हर्षवर्द्धन भी बड़ा वीर राजा था। वह शासक भी अच्छा था। वह भी अपनी प्रजा की भलाई करता था। उसके दरबार में भी विद्वान रहते थे। उसे धर्म और दान में बड़ी रुचि थी। वह बौद्धधर्म मानता था। लेकिन

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दूसरे धर्मों का भी आदर करता था। वह ब्राह्मणों, साधुओं और गरीबों को खूब दान दिया करता था।

हर्षवर्द्धन के समय में चीन का एक दूसरा यात्री भी भारत में आया था। उसका नाम हुएनसंग था। हर्षवर्द्धन के बाद भारत में कई वंशों का उदय हुआ। बंगाल में पालवंश और कन्नौज में प्रतिहार वंश प्रसिद्ध थे। कन्नौज में राठौर वंश और अजमेर में चौहान वंश का भी उदय हुआ था। राठौर वंश में जयचन्द और चौहान वंश में पृथ्वीचन्द नाम के राजा हुए थे। दक्षिण में चोल और पल्लव वंश भी प्रसिद्ध थे। इनमें कई प्रसिद्ध राजपूत वंश थे।

भारत में राजपूत लोग बड़े ही वीर और साहसी होते थे। वे तलवार उठाने और तलवार चलाने में बहुत ही तेज थे। राजपूत औरतों में भी साहस और वीरता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। अपनी इज्जत एवं शान की रक्षा के लिए राजपूत सरदार और उनकी औरतें सदा ही मर मिटने को तैयार रहते थे। जो शासक राजपूतों को अपने पक्ष में कर लेते थे वे तो चैन से रहते थे, जैसे—अकबर। जो शासक राजपूतों से दुश्मनी करते थे वे सदा ही बेचैन रहा करते थे, जैसे—औरंगजेब। राजपूतों ने अकबर की बहुत मदद की किन्तु औरंगजेब को बहुत परेशान कर दिया था।

हिन्दू लोग अपने देश से बाहर भी गये। वे चीन, बर्मा, जापान, श्याम, मलाया, जावा, सुमात्रा आदि देशों में गये थे। इन देशों में भारतीय सभ्यता के बहुत चिह्न मिलते हैं। कम्बोडिया में अंकोर नगर था। वहाँ शिवजी का एक मंदिर बना था। भारतीय भाषा के कई शब्द भी मिलते हैं।

हिन्दुओं ने बाहर में अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार तलवार के द्वारा नहीं किया था। उन्होंने कोई जोर-जबर्दस्ती भी नहीं की थी। उन्होंने अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार किया

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

और किसी पर अपना धर्म नहीं लादा। वे शांतिपूर्वक रहे और उन्होंने दूसरो को भी शांतिपूर्वक रहने दिया।

एकता की कमी--मुसलमानों की जीत :

इस प्रकार प्राचीन भारत के लोगों ने बड़ी उन्नति की। वे सभ्य थे। उन्होंने लोंगों को त्याग और तपस्या, सेवा और सादगी, शांति और सहिष्णुता, सहयोग और सहानुभूति का पाठ पढ़ाया। लेकिन उनमें एक बात की बड़ी कमी थी। उनमें एकता की कमी थी, उनमें संगठन नहीं था ; तभी तो राजा आम्भीक ने यूनानियों से लड़ने में राजा पोरस का साथ नहीं दिया। पोरस हार गए। इसके चलते हमारे देश की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर कई यूनानी राज्य कायम हो गये थे। बाद में चलकर हिन्दुओं में स्वार्थ बढ़ने लगा। आपस में मेल-जोल घटने लगा। बल भी कम होने लगा। इससे मुसलमान लोगों ने फायदा उठाया। हिन्दुओं और मुसलमानों में लड़ाई हुई। फिर मुसलमानों से लड़ने में जयचन्द ने पृथ्वीराज का साथ नहीं दिया। हिन्दू लोग हार गये। मुसलमान जीत गए। अब भारत पर मुसलमानों का राज्य कायम हुआ। बारहवीं शताब्दी के अन्त में यह घटना घटी।

मुस्लिम राज्य की स्थापना :

भारत में मुसलमानों के पाँच वंशों ने राज्य किया—गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी वंश। गुलाम वंश में अल्तमश और बलबन, खिलजी वंश में अलाउद्दीन तथा तुगलक वंश में मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोजशाह प्रसिद्ध राजा हुए। राजाओं को सुलतान कहते थे। इनके राज्य को सल्तनत कहा जाता था।

मुसलमानों के शासन काल में दक्षिण में हिन्दुओं का उत्थान हुआ था। उन्होंने विजयनगर में एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

की। इसके संस्थापक कृष्णदेव राय थे। यह राज्य धन-दौलत से परिपूर्ण था। विदेशी भी इसकी प्रशंसा करते थे।

मुसलमानों ने भी दक्षिण में एक शक्तिशाली राज्य कायम किया था। इसका नाम था बहमनी राज्य। बाद में यह पाँच टुकड़ों में बंट गया। मुसलमानों को विजयनगर राज्य से द्वेष था। उन्होंने विजयनगर पर हमला कर दिया। विजयनगर तहस-नहस हो गया।

मुगल राज्य की स्थापना :

लोदी वंश में इब्राहीम नाम का एक सुल्तान हुआ। वह कमजोर था। बाबर ने उसे एक लड़ाई में हरा दिया। यह लड़ाई पानीपत के मैदान में हुई थी। इसीको पानीपत की पहली लड़ाई कहते हैं। इस तरह बाबर ने १५२६ ई० में मुगल वंश की स्थापना की।

मुगल वंश में बाबर के बाद पाँच प्रसिद्ध राजा हुए—हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब। हुमायूँ और अकबर के बीच एक अफगान राजा हुआ था। उसका नाम शेरशाह था। शेरशाह और अकबर दोनों की बड़ी प्रशंसा होती है। दोनों ही अपनी सभी प्रजा को बराबर समझते थे। वे जाति और धर्म के नाम पर कोई अत्याचार नहीं करते थे। वे प्रजा की भलाई पर बहुत ध्यान देते थे।

मुगलवंश में शाहजहाँ एक राजा हुआ। वह कला का प्रेमी था। उसने बहुत-सी इमारतों को बनवाया। उसकी बनवायी हुई एक बहुत ही प्रसिद्ध इमारत है। उसका नाम ताजमहल है। उसने इसे अपनी पत्नी की स्मृति में बनवाया। उसकी पत्नी का नाम मुमताजमहल था। ताजमहल बहुत ही सुन्दर इमारत है। यह आगरे में स्थित है। देश-विदेश के लोग इसकी सुन्दरता को देखकर दंग रह जाते हैं।

मुगलवंश में ही औरंगजेब एक राजा हुआ था। वह कट्टर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मुसलमान था। वह हिन्दुओं पर अत्याचार करने लगा। अब हिन्दू उसका विरोध करने लगे। वह अपने सुन्नी मुसलमान था। इसलिए उसे शिया मुसलमानों से भी नहीं पटती थी। इसका फल खराब हुआ। उसके बहुत दुश्मन हो गये। दुश्मनों से लड़ाई होने लगी। इसके चलते मुगल साम्राज्य कमजोर हो गया।

गुरु गोविन्द सिंह :

इसी समय सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह का जन्म हुआ था। गुरु गोविन्द सिंह ने ही सिक्खों को सैनिक जाति के रूप में बदल दिया था। सिक्खों और मुगलों में वहुत लड़ाई हुई थी। दोनों पक्ष के वहुत लोग मारे गये थे।

शिवाजी :

इसी समय मराठों के बीच शिवाजी का उदय हुआ था। शिवाजी साधारण परिवार में पैदा हुए थे। किन्तु अपनी योग्यता से बहुत ही ऊँचे पद पर पहुँच गये। मराठों और मुगलों में भी लड़ाई हुई। शिवाजी ने मुगलों को परेशान कर दिया था। औरंगजेब ने शिवाजी को दबाने के लिए पूरी कोशिश की किन्तु शिवाजी के आगे उसकी एक भी न चली। औरंगजेब ने अपनी हार मान ली।

शिवाजी महान सैनिक और विजेता थे। वे कुशल शासक भी थे। उन्होंने मराठों को संगठित किया। उन्होंने हिन्दुओं की प्रतिष्ठा बढ़ायी। अब मुसलमानों का अहंकार दूर होने लगा। अब वे हिन्दुओं के निकट आने लगे। दोनों में कुछ मेल-जोल बढ़ने लगा।

शिवाजी के मरने के बाद बहुत समय तक मराठे शक्तिशाली रहे। एक बार तो मुगल सम्राट शाहआलम ने मराठों के अधीन शरण पायी। मराठों ने उसकी रक्षा की और उसे गद्दी पर भी बैठा दिया था।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लेकिन मराठे भी बराबर एक होकर नहीं रहे। वे भी आपस में लड़ाई-झगड़ा करने लगे। एक बार (१७६१ ई०) तो पानीपत के मैदान में अफगानों ने उन्हें पराजित कर दिया था। फिर भी वे सँभल नहीं सके। वे आपस में ही लड़ते रहे। इसका फल यह हुआ कि वे कमजोर हो गये और दुश्मनों ने उन्हें दबा दिया।

आपसी फूट :

हिन्दुओं की तरह मुसलमानों में भी एकता नहीं रह गयी। हिन्दुओं में जातीय दुश्मनी थी। ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र— सभी एक दूसरे को बुरी नजर से देखने लगे। प्रत्येक जाति के लोग आपस में भी लड़ने लगे। मुसलमानों में भी शिया और सुन्नी थे। वे भी आपस में लड़ने लगे। हिन्दुओं और मुसलमानों में भी आपस में मेल-जोल का अभाव हो गया। इस तरह हिन्दू-हिन्दू से और मुसलमान मुसलमान से मतभेद रखने और लड़ने लगे। हिन्दू और मुसलमान भी आपस में झगड़ने लगे। सभी लोग भूल गये कि एकता में में ही बल है और फूट में ही विनाश है। कहा गया है कि "विनाशकाले विपरीत बुद्धि" यानी विनाश के समय बुद्धि उलटी हो जाती है। यह कथन बहुत ठीक है। भारतीयों की अवनति होनेवाली थी। इसलिए उनका दिमाग ठीक नहीं रहा। उनकी बुद्धि मन्द पड़ गयी।

अंग्रेजों को लाभ :

इस प्रकार अठारहवीं सदी में (१७००-१८०० ई०) भारत में एकता का लोप हो गया। इससे अंग्रेजों ने लाभ उठाया। खूब लाभ उठाया। अंग्रेज इंगलैंड के लोगों को कहते हैं। इंगलैंड को विलायत भी कहते हैं। अंग्रेजों के पूर्वज जब इग्लैंड में अभी बस रहे थे उस समय हमारा देश बहुत आगे बढ़ा हुआ था। उस समय भारत में गुप्तवंश का राज्य था। लेकिन अंग्रेजो में एकता थी और उनकी

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

शक्ति बढ़ती रही। अंग्रेज लोग पहले से भारत में व्यापार करते थे। इसके लिए उनकी एक कम्पनी कायम हुई थी। लेकिन यहाँ के लोगों की कमजोरी को देखकर वे धीरे-धीरे राज्य दखल करने लगे। एक सौ वर्ष के अन्दर (१७५७-१८५७) उन्होंने करीब समूचे भारत पर अपना अधिकार कर लिया। हिन्दू और मुसलमान अंगरेजों से लड़े भी। लेकिन वे सभी एक साथ मिलकर अंग्रेजों से नहीं लड़े और सभी एक-एक कर हार गये। जब एक के साथ लड़ाई होती थी तो दूसरा मुँह ताकता था या मौज उड़ाता था। सबसे पहले अंग्रेजों से लड़ने में मिरजाफर ने सिराजुदौला का साथ नहीं दिया। फल यह हुआ कि धीरे-धीरे अंग्रेज भारत में राजा बन बैठे। ठीक ही कहा गया है कि "अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत" यानी जब चिड़ियों ने खेत में फसल को बर्बाद कर दिया तो उसके बाद पछताने या चिन्ता करने से क्या फायदा होता है। कोई फायदा नहीं होता है बल्कि अपने स्वास्थ्य की हानि ही होती है।

अंग्रेजी शासन का फल--दासता :

हम कह चुके हैं कि १८५७ ईसवी तक समूचे भारत पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। भारत भारतवासियों का नहीं रह गया। भारत की जमीन, भारत का आसमान सब अंग्रेजों के हो गये। विलायत भारत का स्वामी हो गया। स्वामी और गुलाम में उतना अन्तर है जितना कि दिन और रात में—जमीन और आसमान में अन्तर होता है। जब स्वामी कुर्सी पर बैठा रहता है तो गुलाम खड़ा रहता है। स्वामी आदेश देता है और गुलाम उसे चुपचाप पालन करता है। स्वामी को अधिकार होते हैं किन्तु गुलाम को केवल कर्त्तव्य ही होते हैं। स्वामी का सिर बराबर ऊँचा रहता है जबकि गुलाम का सिर बराबर नीचे की ही ओर झुका रहता है। इसलिए गुलाम को दुःख हुआ करता है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अंग्रेज भारतवासियों को हर तरह से सताने लगे। वे भारतवासियों का खून चूसने लगे। वे भारत के धन को भारत में अपने भोग-विलास पर खर्च करने लगे। इतना ही नहीं, वे भारत के धन को ढोकर अपने देश विलायत में ले जाने लगे। अंग्रेजों ने यहाँ के काम-धन्धों को भी नष्ट कर दिया। नतीजा यह हुआ कि भारत गरीब होने लगा। यहाँ के बहुत लोगों को खाना-कपड़ा भी ठीक से मिलना कठिन होने लगा। पढ़-लिख लेने के बाद भी भारतीयों को अच्छी-अच्छी नौकरी नहीं मिलती थी। अच्छे एवं ऊँचे पदों पर अंग्रेज लोग ही बहाल होते थे। उन्हें बहुत अधिक वेतन मिलता था। भारत के लोगों को छोटी-छोटी नौकरी ही मिलती थी। अंग्रेज भारतीयों की कोई इज्जत नहीं करते थे। वे भारतीयों से अधिक अपने नौकर-चाकर की इज्ज़त करते थे। उनके कुत्ते बहुत से भारतीयों से अधिक सुखी थे।

अंग्रेजी शासन का विरोध :

ये सभी बातें बहुत से भारतीयों को पसन्द नहीं थीं। भारत में भारतवासियों का अंग्रेजों द्वारा अपमान, अपने देश में अपने देश के लोगों का विदेशियों द्वारा शोषण ! भारतवासी इस अन्याय को सहन नहीं कर सकते थे। वे अंग्रेजों का विरोध करने लगे। ऐसे तो शुरू से ही भारत के लोगों ने अंग्रेजों का विरोध किया था। किसी ने भी खुशी से उनकी गुलामी को स्वीकार नहीं किया था। सिराजुदौला और मीरकासीम, हैदर और टीपू, मराठे और सिक्ख सबों ने अंग्रेजों का विरोध किया और उन्हें भारत से खदेड़ देना चाहा। लेकिन वे अकेले ही अंग्रेजों से लड़ाई लड़ते थे। एक कहावत है कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।" लोगों में मेल-जोल नहीं था—एकता नहीं थी। इसका फल यह हुआ कि सब एक-एक करके अंग्रेज से हारते गये। अंग्रेज उनके राज को दखल करते गये।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

भारतीयों का विद्रोह :

भारत के लोग अंग्रेजों से बहुत बिगड़ गये। उन्होंने अंग्रेजों के विरोध में विद्रोह कर दिया। यह विरोध १८५७-५८ ई० में हुआ। यह विद्रोह पहले सैनिकों में हुआ। फिर यह और लोगों में फैला। इस विद्रोह के नेता थे बाबू कुँवर सिंह, रानी लक्ष्मीबाई और तातीया टोपे। ये सब लोग भारत में अंग्रेजी राज्य को खतम कर देना चाहते थे। लेकिन भारत का दुर्भाग्य था। भारतवासी अंग्रेजों से लड़ाई में हार गये। अभी भी भारत के लोगों में एकता नहीं थी। कुछ तो ऐसे लोग भी थे जिन्होंने अंग्रेजों का ही साथ दिया। उन्होंने अपने भाई भारतवालों का साथ नहीं दिया।

अंग्रेजों की रंजगी :

विद्रोह होने से अंग्रेज लोग बहुत रंज हो गये। अब वे भारत पर और भी अधिक अत्याचार करने लगे। विलायत का राजा भारत का राजा बना दिया गया। कम्पनी तोड़ दी गई। अंग्रेज भारत के धन का लूट-पाट करते रहे। भारत के लोग अपने ही घर में सुखी नहीं थे। लेकिन अंग्रेज भारत में खूब मौज उड़ाते थे। उनके कुत्ते भी बहुत सुख से रहते थे। अंग्रेज गोरे साहब कहलाते थे। वे भारतीयों में फूट भी पैदा करते थे। "फूट डालो, शासन करो"—उनकी नीति बन गई थी। वे हिन्दू और मुसलमान के बीच फूट डालने लगे। वे हिन्दुओं में भी आपस में मतभेद फैलाने लगे। वे भारत में ईसाई धर्म का भी प्रचार करने लगे। ओह! इतना ही नहीं—वे अपनी अंग्रेजी भाषा का भी यहाँ प्रयोग और प्रचार करने लगे।

कांग्रेस की स्थापना :

इन सभी बातों से भारतवासी अंग्रेजी शासन से छुटकारा पाना चाहते थे। उन लोगों ने एक संगठन कायम किया। उसका नाम कांग्रेस पड़ा। इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भी कहते हैं। इस

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कांग्रेस में बड़े-बड़े नेता हुए हैं। गोपालकृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, सुभाषचन्द्र बोस, मोतीलाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना अबुल कालाम आजाद और महात्मा गाँधी के नाम बहुत प्रसिद्ध हैं। ऐसे तो कांग्रेस में छोटे-बड़े बहुत से नेता थे।

स्वाधीनता आंदोलन में महिलाएँ भी किसी से पीछे नहीं थीं। बहुत महिलाएँ कांग्रेस की सदस्या थीं। स्वाधीनता के लिए त्याग और तपस्या करने, कष्ट और कठिनाइयों को सहने में वे पुरुषों से भी आगे रहती थीं। महिलाओं में श्रीमती प्रभावती देवी, श्रीमती सरोजनी नायडू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, कस्तूरबा गाँधी और श्रीमती कमला देवी के नाम बहुत प्रसिद्ध हैं।

महात्मा गाँधी :

देश या कांग्रेस में जितने नेता हुए उनमें महात्मा गाँधी का नाम सबसे ऊपर है। उनका पूरा नाम था मोहनदास करमचन्द गाँधी। वे सन्त-महात्मा थे। वे त्यागी और तपस्वी थे। लेकिन वे संसार छोड़-कर जंगलों और गुफाओं में नहीं रहते थे। वे संसार में ही रहकर मानव की सेवा करते थे। उन्हें किसी से बैर नहीं था। उनमें किसी से बदला लेने की कोई भावना नहीं थी। वे कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। वे भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त करना चाहते थे; फिर भी उन्हें अंग्रेजों से कोई द्वेष नहीं था। वे समाज-सुधारक भी थे। वे समाज की बुरी प्रथाओं को भी समाप्त कर देना चाहते थे।

भारत की राजनीति में गाँधी जी के प्रवेश करने से भारतीय राज-नीति का स्वरूप ही बदल गया। गाँधी जी ने भारत का स्वतन्त्र करने के लिए अहिंसा की नीति अपनायी। पुरुष-स्त्री, बच्चे, बूढ़े, जवान सभी ने उनका साथ दिया। कांग्रेस का आन्दोलन जन-आन्दोलन हो गया। पहले गाँधीजी ने भारत में अंग्रेजों के साथ असहयोग करना शुरू किया। उसके बाद वे नम्रतापूर्वक कानून का उल्लंघन करने

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

लगे। सबसे पहले उन्होंने नमक-कानून को तोड़ा। अंग्रेज लोग बहुत परेशान होने लगे। १९४२ ई० में तो भारतीयों ने विद्रोह कर दिया। उन्होंने तोड़-फोड़ की नीति अपनाई। कहीं-कहीं वे हिंसा पर भी उतारु हो गये।

अंग्रेज भी भारतवासियों के साथ बहुत जुल्म करने लगे। बहुत से लोगों को जेल दे दिया जाता था। कभी-कभी तो बहुत से लोग गोली से उड़ा दिये जाते थे। घरों में आग भी लगा दी जाती थी। सम्पत्ति लूट ली जाती थी। शरीर पर कोड़े मारे जाते थे। औरतों और बच्चों को भी मार दिया जाता था। बहुत-सी माताएँ और बहनें असहाय हो जाती थीं। लेकिन भारत के लोग गोली और बम से डरने वाले नहीं थे। कुछ भारतीय तो ऐसे थे कि वे गोली और बम का जवाब गोली और बम से ही देने लगे। लेकिन गाँधी जी को ये तरीके पसन्द नहीं थे।

अंग्रेज भारतीयों को बाहर से दबा सकते थे, भीतर से नहीं। वे भारतीयों के शरीर पर नियंत्रण कर सकते थे, उनकी आत्मा पर नहीं। मनुष्य मरता है, विचार का अन्त नहीं होता है।

एक समय आया जबकि अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये। वह समय था १५ अगस्त १९४७ ई०। भारत स्वतन्त्र हो गया।

स्वाधीन भारत :

जब हमारा देश स्वाधीन हो गया तो हमारे देशवासियों ने बड़ी खुशियाँ मनाईं। लोगों का दिल खुशी के मारे गद्‌गद् हो गया था। अब देश अपना हो गया। भारत की भूमि, भारत के लोगों की हो गयी। आसमान अपना हो गया। समुद्र अपना हो गया। हम अपने घर में स्वामी बन गये। जल, थल, नभ—सब हमारे अपने अधिकार में आ गये।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लेकिन अंग्रेजों ने जाने के समय भी हमारे देश की बुराई की। मरता क्या नहीं करता वाली कहावत चरितार्थ हुई। यानी मरने वाला आदमी कभी कुछ भी कर सकता है। अंग्रेज अपने शासन-काल में तो फूट को बढ़ावा देते रहे। फूट डालो और शासन करो—उनकी नीति ही थी। लेकिन जाने के समय भी वे इस सुन्दर देश को भी छिन्न-भिन्न कर गए। उन्होंने सैकड़ों राजा-महाराजाओं को अलग रहने की छूट दे दी।

अंग्रेजों ने भारत को दो टुकड़ों में बाँट दिया—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान। हिन्दुओं और मुसलमानों में मतभेद के ही कारण देश का बँटवारा हुआ। अंग्रेजों ने इस मतभेद को बढ़ावा दिया था। मतभेद के कारण देश का बँटवारा हुआ और देश के बँटवारा के कारण बहुत से लोग मारे गये। बहुत धन का भी नाश हुआ।

फिर भी हमारा देश भारत आजाद हुआ। भले ही इस आजादी के लिए हमें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। उस समय भारत के लोगों में सद्बुद्धि थी—विवेक था। उनमें एकता की भावना थी। सभी राजा-महाराजा भारत के साथ मिल गये। उनके राज्य अब अलग देशी राज्य नहीं रह गये जैसा कि वे पहले थे। अब वे राज्य भी भारत के अंग हो गये। अब एक संविधान भी बना। वह संविधान सारे देश पर १९५० ई० में २६ जनवरी को लागू हो गया। हमारा देश गणराज्य घोषित हुआ।

देश की मौलिक एकता :

संस्कृत के मूल शब्द से मौलिक शब्द का निर्माण होता है। मूल का अर्थ होता है जड़ और मौलिक एकता से मतलब होता है मूल में पायी जानेवाली एकता। उदाहरण के रूप में एक पेड़ को लिया जाय। पेड़ एक है; इसकी जड़ जमीन के अन्दर छिपी हुई है। किन्तु पेड़ की अनेक शाखाएँ हैं, इसमें कई डाढ़ और पत्ते होते हैं। ऐसे ही

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

भारत देश एक है, इसमें भिन्नताएं बहुत हैं किन्तु इसके मूल में एकता भी पायी जाती है। भिन्नताएँ ऊपर हैं। इसलिये वे आसानी से दिखाई पड़ती हैं। किन्तु एकता नीचे है—जड़ में है। अतः वह गंभीरतापूर्वक सोचने-विचारने पर दिखाई पड़ती है।

इस सम्बन्ध में अंग्रेज इतिहासकार विंसेन्ट स्मिथ ने भी कहा है कि भारत की भिन्नता में एकता कायम है लेकिन मौलिक एकता उतनी साफ नहीं दिखाई देती है जितनी बाहरी भिन्नता दीख पड़ती है।

बहुत पुराने समय से कई दृष्टियों से भारत में मौलिक एकता कायम रही है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी अन्तरीप तक और पूर्व में असम के पर्वतों से लेकर पश्चिम में हिन्द-कुश पर्वत तक भारत एक ईकाई के रूप में रहा है। यही भारत की मौलिक एकता है। कवि इकबाल ने बहुत ही सुन्दर ढंग से कहा है कि—

यूनानो मिस्रो रोमां सब मिट गये जहां से,
अब तक बाकी नामो-निशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।

पुराने युग में मिस्र, यूनान और रोम में बहुत उन्नति हुई थी किन्तु पुरानी सभ्यता का अन्त हो गया। भारत में कई बार विदेशी हमले हुए। कुछ विदेशियों ने यहाँ शासन भी किया। कुछ विदेशी तो यहाँ की मिट्टी में घुल-मिल गये और कुछ को देश छोड़कर भाग जाना पड़ा। दुनिया में भारत का नाम-निशान अभी भी कायम है। उसका अस्तित्व बना हुआ है। उसका अपना व्यक्तित्व सुरक्षित है। भारत में हर जगह भेद दिखाई पड़ता है। लेकिन जड़ में एकता ही दीख पड़ती है। इसीलिये भारत की आत्मा अभी तक जीवित रही है। इसकी पुरानी सभ्यता और संस्कृति अभी तक कायम है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आर्थिक दृष्टि से हमारा देश कृषि प्रधान है। सारे देश में खेती की प्रधानता है। सब जगह खेती करने के ढंग प्रायः एक समान हैं। पशुपालन भी प्रमुख पेशा है। कुछ उद्योग-धन्धे और व्यापार भी होते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में भी बहुत समताएँ पायी जाती हैं। हिन्दुओं की तरह मुसलमानों में भी जातियाँ और उपजातियाँ पायी जाती हैं। दोनों में अनेक पर्व मनाये जाते हैं। दोनों के रहन-सहन तथा पोशाक में भी समता पायी जाती है। हिन्दुओं के रहन-सहन और विधि-विधानों में सब जगह समानता पायी जाती है। सारे देश में धोती, कुर्त्ता और टोपी के पहनने वाले लोग पाये जाते हैं। बहुत से लोग कमीज, पायजामा, अचकन और लुंगी भी पहनते हैं। विवाह और मृत्यु के सम्बन्ध में सारे देश में प्रायः एक तरह के नियम पाये जाते हैं। समूचे देश में लोग साधु-सन्त, फकीर-संन्यासी, गाय और ब्राह्मण का आदर करते हैं।

धर्म की दृष्टि से भी देश में एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक कई बातों में समता दीख पड़ती है। रामायण और महाभारत की कथाएँ, राम और कृष्ण की गाथाएं देशभर में प्रचलित हैं। वेद, उपनिषद, गीता, पुराण आदि ग्रन्थों को सभी हिन्दू अपना धर्म-ग्रन्थ मानते हैं। बाल गंगाधर तिलक मराठी थे और महात्मा गाँधी गुजराती थे किन्तु उन्हें भी गीता उतनी ही प्रिय थी जितनी प्रिय वह किसी भी बिहारी, बंगाली, मारवाड़ी के लिए हो सकती है। सारे देश में मंदिरों की भरमार है। सब जगह देवी-देवताओं की मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं और श्रद्धा तथा भक्ति से उनकी पूजा होती है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पूजा का सब जगह प्रचार है। दक्षिणी भारत में शिव के उपासक शैवों की प्रधानता है और उत्तरी भारत में विष्णु के उपासक वैष्णवों की प्रधानता है। सारे देश में तीर्थ-स्थान बिखरे हुए हैं जैसे काशी, अयोध्या, हरिद्वार (मायां), अवन्तिका (उज्जैन), द्वारिका और काँची।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भारत की सभी दिशाओं में ये तीर्थ स्थान हैं। ये तीर्थ स्थान मोक्ष देने वाले समझे जाते हैं। गंगा नदी एक राज्य में नहीं बहती है। वह कई राज्यों से होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। सभी भारत-वासियों के लिए गंगा और गंगाजल पवित्र हैं। गंगा के अलावा यमुना, सरस्वती, सिन्धु, गोदावरी, नर्मदा और कावेरी भी भारत की पवित्र नदियाँ हैं। जब मन्त्र द्वारा जल को शुद्ध किया जाता है तो उस मन्त्र में इन सातों नदियों का उल्लेख मिलता है। हिन्दुओं के चार परम पवित्र धाम हैं। इनके नाम हैं—बदरीनाथ, द्वारिका, रामेश्वरम् और जगन्नाथपुरी। हिन्दू इन चारों धामों का दर्शन कर अपने को स्वर्ग का अधिकारी मानते हैं। ये धाम देश के चारों तरफ हैं। बदरीनाथ उत्तर में, द्वारिका पश्चिम में, रामेश्वरम् दक्षिण में और जगन्नाथपुरी पूर्व में हैं। पूर्व में गंगासागर (बंगाल की खाड़ी में) और कामाख्या (आसाम में) भी हिन्दुओं के पवित्र स्थान हैं।

बारह ज्योतिर्लिंग :

बारह प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग हैं जो देश के विभिन्न भागों में स्थित हैं। ये शिव के विभिन्न रूपों की ओर संकेत करते हैं। (१) श्री सोमनाथ गुजरात के काठियावाड़ या सौराष्ट्र में स्थित है। एक हजार ईसवी तक सोमनाथ का मन्दिर भारत में बहुत ही समृद्धिशाली था। महमूद गजनी द्वारा इसका लूट-पाट इतिहास की प्रसिद्ध घटना है। उसके बाद इस मन्दिर का पुनर्निर्माण किया गया। अभी भी सोमनाथ के प्रति भारतीयों की श्रद्धा-भक्ति में कमी नहीं दिखाई पड़ती है। (२) श्री महाकालेश्वर मध्यप्रदेश के अन्दर उज्जैन में स्थित है। (३) मध्यप्रदेश में ही श्री ऊंकारेश्वर लिंग स्थिति है। (४) हिमालय की गोद में श्री केदारनाथ बदरीनाथ प्रसिद्ध दर्शनीय देव-स्थान हैं। (५) काशी नगरी में श्री विश्वनाथजी स्थित हैं। (६) बिहार के अन्तर्गत देवघर में स्थित ज्योतिर्लिंग श्री वैद्यनाथ

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

के नाम से प्रसिद्ध है। (७) गोदावरी नदी जहाँ से निकलती है उसी के पास पर्वत पर श्री त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थित है। (८) मद्रास में कृष्णा नदी के तट पर श्री मल्लिकार्जुन स्थित है। (९) बम्बई के निकट भीमा नदी के तट पर श्री भीमशंकर स्थित है। (१०) द्वारका के निकट श्री नागेश्वर ज्योतिर्लिंग है। (११) दक्षिण में दौलताबाद स्टेशन के निकट श्री घुमेश्वर लिंग स्थित है। (१२) रामेश्वर नामक ज्योतिर्लिंग दक्षिण में रामेश्वर मन्दिर में स्थित है। यह मन्दिर बड़ा ही विशाल है।

ये ज्योतिर्लिंग अति प्राचीनकाल से ही भारतीय एकता का परिचय देते हैं।

प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार डा० रमेशचन्द्र मजुमदार के मतानुसार महाकाव्यों और पुराणों में समस्त देश को भारतवर्ष या भारतभूमि कहकर भारत की मौलिक एकता पर जोर दिया गया है।

उत्तरी भारत के लोग दक्षिण भारत में और दक्षिण भारत के लोग उत्तरी भारत में तीर्थ करने के लिए आते जाते हैं। ऐसे ही पूर्वी भारत के लोग पश्चिमी भारत में और पश्चिमी भारत के लोग पूर्वी भारत में तीर्थ करने के लिए आते-जाते हैं। त्रिवेणी (गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम) में तो खास मौके पर नहाने के लिए देशभर से लोग टूट पड़ते हैं। यह संगम स्थान इलाहाबाद में स्थित है। इलाहाबाद को ही प्रयाग भी कहते हैं। कुम्भ का मेला तो यहीं पर लगता है जहाँ देश के कोने-कोने से नर-नारी इकट्ठे होते हैं। १९६६ ई० में माघ (जनवरी) के महीने में कुम्भ मेले का आयोजन हुआ था। १५ दिनों तक बड़ी भीड़ थी। अनुमान है कि पचास लाख से भी अधिक लोग नहाने के लिए देश के कोने-कोने से आये हुए थे। १९७७ ई० के माघ महीने (जनवरी) में तो महाकुम्भ लगा था। विचित्र दृश्य था। अपार भीड़ थी। लाखों लोग थे। देश के हर भाग से लोग आये हुए थे। हरिद्वार में भी समय-समय पर कुम्भ का आयो-

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

होता है। हरिद्वार भागीरथी (गंगा) के तट पर स्थित है। क्षिप्रा तट पर स्थित उज्जैन (अवंती) में और गोदावरी तट पर स्थित नासिक में भी कुम्भ के मेले लगते हैं। इन स्थानों में देश के सभी भागों से तीर्थयात्री जुटते हैं। उज्जैन मध्य प्रदेश में है। नासिक महाराष्ट्र में है। नासिक को पश्चिम भारत की काशी कहा जाता है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार जब देवगुरु बृहस्पति वृष राशि में रहते हैं तब प्रयाग में, जब कुम्भ राशि में रहते हैं तब हरिद्वार में, जब बृश्चिक राशि में रहते हैं तव उज्जैन में और जब सिंह राशि में रहते हैं तब नासिक में कुम्भ पर्व होता है।

हरिहर क्षेत्र भी समस्त भारतवासियों के लिए प्रसिद्ध स्थान है। यहीं साल में कार्तिक पूर्णिमा को एक विशाल मेला लगता है। यहाँ देश के सभी भागों से लोग आते हैं। मेले में सभी प्रकार के माल-मवेशी, पशु-पक्षी लाये जाते हैं। हरिहर क्षेत्र का दूसरा नाम सोनपुर भी है।

सोनपुर में बाबा हरिहरनाथ का मन्दिर है। मन्दिर में दर्शनार्थियों की अपार भीड़ होती है। कार्तिक पूर्णिमा को नदी में स्नान करने का बड़ा महत्व माना जाता है। लोग गंडक में स्नान करके बावा हरिहरनाथ पर जल चढ़ाते हैं।

विहार में देवघर में बाबा वैद्यनाथ का मन्दिर है। बाबा के दर्शन हेतु देश के हर भाग से लोग आते हैं। सावन महीने में काँवरियों और दर्शनार्थियों की अपार भीड़ होती है।

काशी में बाबा विश्वनाथ जी का मन्दिर है। यहाँ भी देश के हर भाग से यात्री आते हैं और विश्वनाथजी का दर्शन करते हैं। ऐसे ही आन्ध्र प्रदेश में स्थित तिरुपति में बालाजी विश्वनाथ का मन्दिर देशभर में प्रसिद्ध है। दक्षिण भारत के लोग काशी में और उत्तर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भारत के लोग तिरुपति में विश्वनाथ जी (बालाजी) के दर्शन हेतु आते जाते हैं।

राष्ट्रीय एकता की दिशा में तीर्थ स्थानों का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध विद्वान् श्री वासुदेवशरण अग्रवाल का मत उल्लेखनीय है। उनका कहना है कि "तीर्थों के द्वारा भूमि को देवत्व प्रदान किया गया। प्रमुख देवी-देवताओं से सम्बन्धित तीर्थ देशभर में फैले हुए हैं। तीर्थों के रूप में मातृभूमि के धार्मिक स्वरूप की समग्रता और अखण्डता का विश्वास प्रत्येक सम्प्रदाय में पाया जाता है। उस रूप को अपनी आँखों से देखने और उसे अपनी श्रद्धा अर्पित करने की युक्ति तीर्थयात्रा में मिलती है। तीर्थयात्रा भारतीयों के व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन की महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति है। उसकी सहायता से देश के विभिन्न भागों के निवासी एक दूसरे का अत्यन्त निकट परिचय और सम्मान प्राप्त करते आये है। प्रान्तीय दूरी और पृथक्ता को हटाने में तीर्थयात्रा द्वारा सबसे अधिक सहायता मिली। तीर्थयात्रा के कारण संस्कृति की धाराएँ एक छोर से दूसरे छोर तक फैलती रहती थीं। लाखों करोड़ों मनुष्यों के लिए देश की एकता तीर्थों के रूप में प्रकट हुई। तीर्थों को धर्म और संस्कृति का विद्युत भंडार ही कहना चाहिए।"

शंकर (शंकराचार्य) ने चार मठ बनवाया था। ये मठ भी देश के चारों कोने पर बनाये गये थे। सबसे बढ़कर यह बात है कि शंकर हिन्दू धर्म के उद्धारक थे। लेकिन उनका जन्म सुदूर दक्षिण में मलयाचल प्रदेश केरल में हुआ था। देश के सभी धर्मों में समता पायी जाती है। हिन्दू, जैन, बौद्ध, इस्लाम सभी धर्मों में अच्छे विचारों और अच्छे कार्यों पर जोर दिया गया है.। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही अवतार और पैगम्बरों को मानते हैं। सभी धर्मों में आत्मा की अमरता और कर्मफल पर जोर दिया गया है। जैन और बौद्धधर्म वेद को नहीं मानते हैं लेकिन उनकी बहुत-सी पूजा-विधियाँ हिन्दुओं

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

की विधियों के समान हैं। उनके धर्मग्रन्थ भी हिन्दू संस्कृति से प्रभावित हैं।

जो लोग धर्मप्रचार के लिए या प्रेम और और शांति का संदेश लेकर देश से बाहर गये वे भारतीय समझे जाते थे, किसी राज्य विशेष के व्यक्ति नहीं समझे जाते थे।

समूचे देश में संस्कृति की दृष्टि से भी एकता पायी जाती है। आर्य और द्रविड़ वर्ग की भाषाओं में आन्तरिक सम्बन्ध है। उनमें पारस्परिक आदान-प्रदान स्वाभाविक है। उनकी लिपियाँ एक ही मूल यानी ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुई हैं।

हम संस्कृत को प्रान्तीय भाषाओं की जननी कह सकते हैं। गाँधीजी संस्कृत को गंगा नदी के समान पवित्र एवं उपयोगी मानते थे। देश की सभी प्रमुख भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं। सभी भाषाओं में संस्कृत के वहुत शब्द पाये जाते हैं। हिन्दी, मराठी, वंगला, गुजराती आदि भाषाओं पर संस्कृत की गहरी छाप है। सुदूर दक्षिण की तमिल और तेलगू भाषाओं पर भी संस्कृत का गहरा प्रभाव है। देश के सभी प्रमुख धर्म-ग्रन्थ भी संस्कृत में ही पाये जाते हैं। प्राचीन काल से अब तक एक समान संस्कृत साहित्य की धारा प्रवाहित होती रही है। पाणिनी की अष्टाध्यायी और पतंजलि का महाभाष्य पूरे देश में व्याकरण की शिक्षा के प्रमुख आधार रहे हैं।

सभी भाषाओं में अच्छे साहित्य का विकास हुआ है। सभी साहित्य में समस्त भारत को एक देश माना गया है।

कला की चीजों में समानता है। उसके अलंकरण और अभिप्राय में एकरूपता पायी जाती है। सारे देश में मन्दिर पाये जाते हैं। मूर्तियाँ और चित्र मिलते हैं। देश के कई भागों में एक ही तरह के मन्दिर देखे जाते हैं। मूर्तियों और चित्रों पर धार्मिक प्रभाव पाया जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, महावीर, राम, कृष्ण जैसे देवता और

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लक्ष्मी, सरस्वती तथा दुर्गा जैसी देवियों की मूर्तियाँ देश के प्रायः सभी भागों में पायी जाती हैं। चित्रों एवं वास्तुओं की शैलियों में भी समता पायी जाती है।

तक्षशिला, मथुरा, काशी, उज्जयिनी, नालंदा, नवद्वीप, काँची शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। इन केन्द्रों में देश के सभी भागों से शिक्षा एवं ज्ञान प्राप्त करने के लिए लोग आया करते थे। गुरु शिष्य का सम्बन्ध परस्पर सम्मान एवं प्रेम पर आधारित था।

कई पर्व-त्योहार, जैसे होली, रक्षाबन्धन, दीपावली, दशहरा आदि सारे देश में मनाये जाते हैं। समस्त देश में ईद का उत्सव भी मनाया जाता है। कई स्थानों पर होली तथा ईद में हिन्दू और मुसलमान दोनों एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और हर्ष प्रकट करते हैं। सिक्ख लोग गुरू नानक और गुरू गोविन्द सिंह की जयन्ती बड़े धूमधाम से मनाते हैं। लेकिन उन जयन्तियों में सभी वर्गों के हिन्दू भी सम्मिलित होते हैं और गुरुओं के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं सम्मान प्रदर्शित करते हैं।

सभी युगों और सभी धर्मों के सन्तमहात्माओं ने प्रेम एवं भाई-चारे का संदेश दिया है। उनका यह संदेश किसी वर्ग विशेष या किसी एक स्थान के लिए नहीं है। हिन्दुओं के साथ-साथ कई मुस्लिम तथा ईसाई सन्तों और विद्वानों ने भारतीय संस्कृति के विकास में बहुमूल्य योगदान दिया है।

इस तरह भिन्न-भिन्न लोगों ने मिलजुल कर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण किया है। इस भारतीय संस्कृति की अपनी विशेषताएँ हैं और यह संसार की दूसरी संस्कृतियों से भिन्न है।

दार्शनिक क्षेत्रों में भी एकता का आभास मिलता है। वेद, उपनिषद्, षड्-दर्शन, महाकाव्य, पुराण आदि ग्रन्थ सारे भारतीय समाज की बहुमूल्य निधियाँ हैं। कर्म, ज्ञान, भक्ति, ब्रह्म और जीव,

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आत्मा और परमात्मा, माया और प्रकृति, स्वर्ग और नरक आदि के सम्बन्ध में समस्त देश में विचार होता रहा है। श्री वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में "इनके द्वारा लोगों के मन में एक गूढ़ एकता छाई हुई है। यद्यपि उनके मुख की भाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु उनके मन की भाषा एक है। उनके विचारों में सर्वत्र रहस्यमयी एकता है जो असीम है, जो स्वयं वृद्धिशील है और जिसका किसी प्रकार निराकरण नहीं किया जा सकता। सारे भेद मिलकर भी इस अध्यात्मिक ऐक्य (एकता) को नहीं मिटा पाते। जिस प्रकार ईंधन के भीतर अग्नि छिपी रहती है, जिस प्रकार श्वेत फेनिल दुग्ध के भीतर मक्खन व्याप्त रहता है, उसी प्रकार भारतीय मानस में धार्मिक और दार्शनिक विचारों की एकता व्याप्त है। उसे जब चाहे प्रकट किया जा सकता है।"

भूगोल की दृष्टि से भारत एक देश है। इसकी सीमा प्राकृतिक है। उत्तर में हिमालय है और तीन तरफ समुद्र है। इसके अलावा काश्मीर (उत्तर) से कन्याकुमारी (दक्खिन) तक और पंजाब (पश्चिम) से आसाम (पूरब) तक आने जाने में कहीं कोई रुकावट नहीं रही हैं। इस प्राकृतिक सीमा के अन्दर जो क्षेत्र है उसी का नाम भारत वर्ष है। महाभारत और पुराणों में सम्पूर्ण देश के लिए भारतवर्ष का व्यवहार किया गया है। सारे देश के लिए एक नाम का प्रयोग उसकी एकता की ही ओर संकेत करता है।

राजनैतिक दृष्टि से भी समूचे भारतवर्ष को एक देश माना गया है। इस देश में बड़े-बड़े कई राजा हुए। उन सभी राजाओं ने भारत को एक ही देश माना। चन्द्रगुप्त, अशोक, समुद्रगुप्त, हर्षवर्द्धन, अलाउद्दीन और अकबर सभी ने समूचे देश को अपने अधीन करने का प्रयत्न किया था। कुछ राजाओं को इसमें सफलता भी मिली थी।

चन्द्रगुप्त, अशोक, समुद्रगुप्त आदि कुछ राजाओं ने अपने को चक्रवर्ती यानी समस्त देश का सम्राट घोषित किया था। अलाउद्दीन

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

और अकबर ने उत्तरी और दक्षिणी समस्त भारत को अपने अधीन लाने का प्रयत्न किया था। यहाँ के राजाओं ने देश के बाहर कोई विजय करने की योजना नहीं बनाई। लेकिन देश के अन्दर समस्त भू-भाग को एक शासन के अधीन लाकर एकता कायम करने की कोशिश की। इसके लिये उन्होंने छोटे-छोटे राज्यों पर हमला किया और उनके राजाओं से युद्ध भी किया।

अशोक ने सारे देश में शांति और प्रेम के सन्देश का प्रचार किया था। उसके सन्देश पत्थरों (स्तम्भों) पर लिख दिये गये थे। ये पत्थर देश के सभी भागों में पाये जाते हैं। शेरशाह और अकबर ने अपनी सभी प्रजा को एक समान जाना। उन्होंने लोगों के सामने धर्म में तटस्थता बरती और एक राष्ट्र का आदेश रखा। उन्होंने एक तरह से राष्ट्रीय राज्य की स्थापना की।

अंग्रेजी शासनकाल में भारत एक ही देश रहा। अंग्रेजों के अधीन कुछ दृष्टियों से एकता को बल भी मिला था। वे देश में एकता नहीं चाहते थे फिर भी अनजाने ही भारतीय एकता को प्रेरणा मिली थी। उन्होंने सारे देश को अपने अधीन किया था। सारे देश में एक ही शासन था और अंग्रेजी भाषा का प्रचार हुआ था।

अंग्रेजी शासन के विरोध में आन्दोलन शुरू हुआ। स्वाधीनता आन्दोलन में समूचे देश के लोगों ने भाग लिया था। कांग्रेस में प्रत्येक राज्य के हिन्दू और मुसलमान, स्त्री और पुरुष, शामिल हुए थे। यह अखिल भारतीय राष्ट्रीय संस्था थी। देश के हर भाग में इसका सालाना अधिवेशन होता था। राष्ट्रीय गीत में भी राष्ट्र की एकता की झलक मिलती थी। कांग्रेस का अपना एक झंडा भी था। स्वाधीनता आन्दोलन के नेता देश के कोने-कोने में घूमते थे और भाषण देते थे। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, बालगंगाधर तिलक, राजगोपालाचारी, डा॰ राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अब्दुलकलाम आजाद, गफ्फार खाँ, श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित आदि किसी एक राज्य के नेता नहीं थे। ये सम्पूर्ण भारत के नेता थे।

१९४७ ईसवी में १५ अगस्त को अँगरेज यहाँ से चले गये। भारत स्वाधीन हो गया। अँगरेजों की चालबाजी से देश का दो टुकड़ा हो गया किन्तु उसके बाद भी हिन्दुस्तान के नाम से जो देश बच गया वह एक इकाई रहा। स्वाधीनता के बाद भारत में वैसी एकता कायम हुई जैसी एकता पहले भी नहीं देखी गई। ब्रिटिश भारत और देशी भारत का भेदभाव मिट गया। सारा भारत एक हो गया। देश के सभी भागों से दिल्ली में प्रतिनिधि आये। उन्होंने अपने देश के लिए एक संविधान बनाया। एक राष्ट्रीय गीत का निर्माण हुआ। एक राष्ट्रीय झंडा भी निर्धारित हुआ।

स्वाधीनता मिलने के कुछ समय बाद चीन ने भारत की भूमि को हड़पने की कोशिश की। उसने उत्तरी सीमा के कुछ भूभाग पर कब्जा भी कर लिया। इतना ही नहीं, १९६२ ई० (अक्टबर) में तो चीन ने भारत पर उत्तर की ओर से हमला भी कर दिया। अब भारतवासी बहुत रंज हो गये।

चीन पहले भारत का मित्र बना हुआ था। अब वह दुश्मन का काम करने लगा। भारत भी चीन से लड़ने के लिए मैदान में उतर गया। सारे देश में उसका विरोध हुआ। चीनियों के होश ठीकाने आ गये। अब वे पीछे की ओर हटने लगे।

लेकिन चीन शांति से बैठने वाला नहीं था। भारत और पाकिस्तान के बीच अच्छा सम्बन्ध नहीं था। अब चीन भारत के विरुद्ध पाकिस्तान से दोस्ती करने लगा। पाकिस्तान ने भी पश्चिम और उत्तर से भारत पर हमला करना (१९६५ ई०) शुरू किया। भारत ने पाकिस्तान का भी डटकर मुकाबला किया। पाकिस्तान भी पीछे हटने लगा। लड़ाई बन्द करनी पड़ी।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इस तरह चीन तथा पाकिस्तान के हमले के समय भारतवासियों ने अद्भुत एकता का परिचय दिया। सभी जातियों और सभी धर्मों के लोगों ने कंधे से कंधे मिलाकर हमलावरों का विरोध किया। यह देखकर दुश्मनों को बड़ा अचरज हुआ कि भारत में ऐसी एकता है! पं० जवाहरलाल नेहरू ने बहुत ठीक ही लिखा है कि किसी गिरोह की एकता का अनुमान तब होता है जब हम उसका मुकाबला दूसरे राष्ट्रीय गिरोह से करते हैं।

इस प्रकार भारत की मौलिक एकता के सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते। सभी विचारक इस बात से सहमत हैं कि भारत की विभिन्नता में एकता छिपी हुई है। प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार डा० स्मिथ का मत है कि भारत में निस्सन्देह गहरी मौलिक एकता है और यह एकता उस एकता से अधिक महत्त्वपूर्ण है जो भौगोलिक अलगाव या राजनीतिक सत्ता से पैदा हुई है।

भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार डा० राधा कुमुद मुकर्जी ने भारत की मौलिक एकता पर अंग्रेजी में एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है। इसमें एक स्थान पर निष्कर्ष रूप में उन्होंने लिखा है कि "इस तरह भारत को प्रकृति एवं पालन दोनों से, भौगोलिक परिस्थितियों और ऐतिहासिक अनुभवों से, अपने धार्मिक और राजनीतिक विचारों से इकाई के रूप में अनुभव करने और अपने व्यक्तित्व को देखने, सुरक्षित रखने तथा बढ़ाने में सहायता मिलती है।"

भारत के महान नेता और स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू का भी कथन है कि सभ्यता के प्रारम्भ से ही भारत के मस्तिष्क में एकता सम्बन्धी किसी न किसी प्रकार का स्वप्न कायम रहा है। प्रधान मन्त्री श्रीमती गाँधी का भी दृढ़ विश्वास है कि भारत की एकता उतनी ही पुरानी है जितना कि यह देश प्राचीन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भारत के अनेक प्रसिद्ध नेताओं ने भारत की मौलिक एकता का समर्थन किया है। कई विदेशी विद्वान भी इस मत के समर्थक हैं।

एकता के मार्ग में बाधाएँ :

स्वाधीनता मिलने के १० वर्षों के बाद से राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधाएँ दिखाई पड़ने लगीं। इन बाधाओं के दो मुख्य कारण हैं। पहली बात यह है कि मनुष्य का दिमाग बहुत बढ़ गया है लेकिन उसका हृदय संकुचित हो गया है। दूसरी बात यह है कि मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि हो गई है लेकिन उसका विवेक बहुत घट गया है। इन दो कारणों से मनुष्य किसी भी चीज का सही-सही अर्थ नहीं लगा सकता है।

अभी १९४७ में देश का जो विभाजन हुआ और उसके चलते लोगों को जो कष्ट एवं कठिनाई हुए उन्हें लोग अभी भूले नहीं थे। फिर भी भारत के अन्दर कुछ ऐसे संकुचित व्यक्ति भी थे जो उत्तर दक्षिण का नारा लगाने लगे। यह उनकी संकीर्णता का परिचय है, बुद्धिमता का नहीं।

धर्म :

एकता के मार्ग में पहली बाधा तो धर्म है। लोग धर्म का गलत अर्थ लगाते हैं। इसे ही साम्प्रदायिकता कहते हैं। धर्म का गलत अर्थ लगाने से भारी अनर्थ होता है। इसीके चलते हिन्दुओं और मुसलमानों में दंगा-फसाद हुए। खून की नदी बह चली। देश का टुकड़ा हो गया। एक धर्म वाला दूसरे धर्म वाले को कुचल देना चाहता है। लेकिन यह अच्छी बात नहीं है। धर्म तो अच्छी चीज है। असली धर्म से मनुष्यता में अच्छे गुण की वृद्धि ही होती है। आपस में मेल-जोल बढ़ता है। प्राचीन भारत में धर्म के नाम पर कोई खून खतरा नहीं हुआ है। कोई धार्मिक अत्याचार सुनने में नहीं आता है। आधुनिक स्वाधीन भारत में भी साम्प्रदायिक दंगे और मार-

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

काट नहीं होना चाहिए। धर्म तो निजी चीज है। एक ही परिवार में भी जो जिस धर्म को चाहे मान सकता है। फिर भी उस परिवार में एकता कायम रह सकती है, प्रेम बना रह सकता है।

ईश्वर तो एक ही हैं। उसी एक ईश्वर को कई नामों से पुकारते हैं। उसकी पूजा भी अनेक तरीकों से करते हैं। एक कहावत है कि नदी एक, घाट बहुतेरे। एक नदी में अनेक घाट होते हैं। ऐसे ही एक देश में कई धर्मों के लोग रहते हैं और रह सकते हैं। वे सभी मिलकर अपने देश की उन्नति करते हैं और कर सकते हैं।

छुरी से हम बहुत फायदा उठाते हैं। उससे हम सब्जी काटते हैं, फल काटते हैं। उसी छुरी से हम किसी का खून भी बहा सकते हैं। इसमें छुरी का तो कोई दोष नहीं, दोष तो है उस व्यक्ति का जो छुरी का दुरुपयोग करता है। ऐसे ही धर्म के नाम पर जो व्यक्ति वैर-विरोध करता है वही व्यक्ति दोषी है। धर्म का तो कोई दोष नहीं।

मध्ययुग पिछड़ा हुआ युग था। उस युग में धर्म के नाम पर यूरोप में लड़ाई हुआ करती थी। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट एक दूसरे का सिर फोरते रहते थे। वे आपस में वर्षों लड़ते रहते थे। जर्मनी में ऐसी ही एक लड़ाई ३० वर्षों तक (१६१८-४८ ई०) चली थी। इसमें कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट एक दूसरे के विरुद्ध लड़ रहे थे। दोनों पक्ष के कितने लोग मारे गये। लेकिन यह तो आधुनिक युग है। यह तो विज्ञान का युग है। इस युग में धर्म के नाम पर लड़ना और आपस में खून बहाना मूर्खता का कार्य समझना चाहिए।

प्रान्तीयता :

एकता के मार्ग में दूसरी बाधा प्रान्तीयता है। शासन की सुविधा के लिए प्रान्तों (राज्यों) का निर्माण हुआ है। एक वृक्ष में अनेक शाखाएँ होती हैं। ऐसे ही भारत एक देश है और इसके अन्दर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कई प्रान्त हैं, जैसे काश्मीर, पूर्वी पंजाब, पश्चिमी बंगाल, बिहार, आसाम, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र आन्ध्र, मैसूर, केरल, मद्रास, उड़िसा और नागालैण्ड। इन्हें राज्य (स्टेट) भी कहते हैं। ये शासन की सुविधा के लिए ही बनाये गए हैं। लेकिन लोग प्रान्तीयता का गलत अर्थ लगा लेते हैं। वे वृक्ष के बदले शाखाओं को ही प्रधान मान लेते हैं। वे देश के बदले अपने प्रान्त या राज्य को ही अधिक महत्व देते हैं। लेकिन यह बिलकुल गलत बात है। हमें अपने प्रान्त या राज्य की तुलना में देश या राष्ट्र को अधिक महत्व देना चाहिए। देश या राष्ट्र नहीं रहेगा तो प्रान्त या राज्य भी नहीं रहेंगे। हम पहले भारतीय हैं तब बिहारी, बंगाली या और कुछ हैं। हम जब विदेश में जाते हैं तो अपने को भारतीय कहकर ही अपना परिचय देते हैं। विदेशों में हम अपने को अपने प्रान्त का नाम लेकर अपना परिचय नहीं देते हैं। हमारे देश में जितने बड़े-बड़े लोग हुए हैं वे सभी भारतीय या हिन्दुस्तानी ही कहलाते हैं। एक उदाहरण देखा जाय। महात्मा गांधी गुजरात के रहने वाले थे। लेकिन उन्हें गुजराती कहना या समझना गलत है। गांधी जी पहले भारतीय थे तव गुजराती थे। वे केवल गुजरात के लिये नहीं, समूचे देश के लिये ही जिये और मरे। विदेशी उन्हें एक भारतीय के ही रूप में जानते और समझते थे, एक गुजराती के रूप में नहीं।

जातीयता :

एकता के मार्ग में तीसरी बाधा जातीयता है। अच्छे ढंग से काम करने के लिये ही भारत में जाति या वर्ण प्रथा का आरम्भ हुआ है। पहले चार ही प्रधान वर्ण या जातियाँ थीं—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र। सब का काम अलग-अलग बँटा हुआ था। धीरे-धीरे लोग अपना-अपना काम छोड़ने लगे और जन्म के आधार पर जाति निश्चित होने लगी। प्रत्येक जाति में कई उपजातियाँ निकल

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आईं। एक जाति के लोग आपस में मेल-जोल बढ़ाने लगे किन्तु दूसरी जाति के लोगों से बैर-विरोध करने लगे। दो विरोधी जातियों में लड़ाई-झगड़ा होने लगा। वे एक दूसरे का खून बहाने लगे। लेकिन ये सब करना तो मूर्खता है। किसी की कोई जाति या उपजाति हो—हम सब मनुष्य हैं। हम सब भारत के नागरिक हैं। हम सब भारतीय हैं। इस तरह इस देश के जितने पुरुष हैं सभी एक दूसरे के भाई हैं। सभी नारियाँ एक दूसरे की बहिन हैं। अतः सभी भाइयों और बहनों में मेल-जोल रहना चाहिये। एक फुलवारी में अनेक प्रकार के फूल और फल रहते हैं और वे एक साथ रहते हैं। ऐसे ही भारत एक देश है, एक राष्ट्र है और इसमें अनेक जातियों के लोग बसे हुए हैं। लेकिन उन्हें एक साथ प्रेम से रहना चाहिये। प्रत्येक जाति के लोगों को साथ मिल-जुलकर रहना चाहिये। सबको समझना चाहिये कि एकता में बल है और फूट में ही कमजोरी है।

भाषा :

एकता के मार्ग में चौथी बाधा है भाषा। भारत में अनेक बोलियाँ और भाषाएँ प्रचलित हैं। संविधान में चौदह भाषाओं को मान्यता दी गई है। भारत एक विशाल देश है और इसमें अनेक भाषाओं का होना कोई अचरज की बात नहीं है। अचरज तो इस बात में है कि एक भाषा के बोलने वाले लोग दूसरी भाषा के लोगों से दुश्मनी करते हैं। भाषा के आधार पर भी कटुता पायी जाती है। हर भाषा के लोग अपने लिए अलग राज्य ही चाहते हैं लेकिन यह गलत और अनुचित बात है।

भाषा के आधार पर राज्यों का निर्माण अधिक लोग चाहते हैं। लेकिन इसके बुरे फलों को कम ही लोग समझते हैं। यदि भाषा के आधार पर राज्य बना दिये जायँ तो इससे कुछ थोड़े से लोगों को कुछ फायदा हो सकता है। लेकिन इससे देश की अधिक बुराई हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सकती है। देश कई छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट जायगा। ये छोटे-छोटे राज्य अपने पैर पर खड़े नहीं हो सकेंगे। सुरक्षा एवं आर्थिक दृष्टि से राष्ट्र कमजोर हो जायेगा। ऐसी दशा में विदेशी दुश्मन भारत पर हमला कर इसे फिर पराधीन कर सकते हैं। अतः यदि एक प्रांत या राज्य के अन्दर कई भाषाओं के बोलने वाले लोग रहते हैं तो इससे कोई हानि नहीं है। सबको एक साथ मिल-जुलकर रहना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भाषा बढ़ानी चाहिये और दूसरे की भाषा के विकास में भी सहयोग देना चाहिये।

रूस में करीब पचास भाषाओं का प्रचार है, लेकिन वहाँ भाषा को लेकर कहीं कोई झगड़ा नहीं है। सभी भाषाओं के लोग देश के विकास में सहयोग देते हैं। यह बात भी सभी लोग जानते हैं कि रूस संसार का एक बहुत ही शक्तिशाली देश है।

बहुत पहले कांग्रेस ने एक बार सोचा था कि भाषा के ही आधार पर राज्य बनाया जाय। स्वाधीनता मिलने के बाद भारत में बहुत लोग इसकी माँग करने लगे। वे इसके लिए हड़ताल करने लगे—अपना खाना पीना भी छोड़ने लगे। सरकार ने कहीं-कहीं लोगों की बात मान ली। इस तरह आन्ध्र, गुजरात और महाराष्ट्र बने किन्तु इससे लोगों का मन बढ़ने लगा। इसकी माँग बढ़ने लगी। सरकार को इससे खतरा मालूम होने लगा। अतः सरकार भाषा के आधार पर राज्य बनाने के विचार का विरोध करने लगी।

आजादी मिलने के बाद सारे देश के लिए एक भाषा पर बहुत जोर दिया गया। इसके लिए हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को स्वीकार किया गया। लेकिन कुछ लोग इसका भी विरोध करने लगे। वे अंग्रेजी को ही अभी कायम रखना चाहते हैं। लेकिन यह ठीक नहीं है। अपने देश में दूसरे की भाषा बड़ी ही विचित्र बात है—बड़ी लज्जा की बात है। अपने देश में अपना राज है। सब कुछ अपना है। भाषा भी तो अपनी ही होनी चाहिये।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बहुत लोग मानते हैं कि हिन्दी ही सारे देश की भाषा बन सकती है। इसे बहुत लोग जानते, समझते और बोलते हैं। फिर जब लोग अंग्रेजी पर अधिकार कर लेते हैं तो हिन्दी पर भी अधिकार कर लेना कोई कठिन काम नहीं है। यदि कुछ कठिनाई हो भी तो देश की भलाई के लिए उसे सहन भी करना ही चाहिये। देश की एकता के लिए सारे देश में एक भाषा का प्रचार बहुत ही जरूरी है।

आर्थिक विषमता - समाज में आर्थिक विषमता है। किसी के पास धन बेकार पड़ा हुआ है, किसी के पास इतना धन नहीं है कि वह जीवन की आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त कर सके। कोई खाते खाते मरता है तो कोई भोजन के अभाव में भूख से छटपटाकर मर जाता है। धनी और गरीब के बीच गहरी एवं चौड़ी खाई है। यह स्थिति खतरनाक है।

आर्थिक विषमता से वर्ग-संघर्ष को प्रोत्साहन मिलता है। पूँजी-पति और मजदूर में, शोषक और शोषित में, धनी और गरीब में प्रेम एवं सहानुभूति का अभाव पाया जाता है। इससे धनियों के प्रति असन्तोष एवं अविश्वास पैदा होते हैं। इससे असामाजिक तत्वों को बढ़ावा मिलता है।

राजनैतिक दल—इङ्गलैंड में राजनैतिक क्षेत्र में दो ही दलों की प्रधानता रहती है। १९१८ ई० तक उदार (लिबरल) और अनुदार (कनजरवेटिव) दो प्रधान राजनैतिक दल थे। १९१८ ई० के बाद उदार दल की अवनति हो गई। श्रम (लेबर) दल ने उदार दल का स्थान ले लिया। इस तरह एक दल की सरकार बनती है तो दूसरा दल विरोध-पक्ष में रहता है। सामान्य रूप से चुनाव सम्पन्न हो जाता है और सरकार में भी परिवर्तन हो जाता है। अप्रिय एवं दुखद घटनाएँ नहीं होती हैं।

किन्तु भारत में स्थिति भिन्न है। यहाँ छोटे-बड़े अनेक राजनैतिक दल हैं। इनका नैतिक स्तर साधारण कोटि का है। ये सभी राज-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नैतिक दल—छोटे हों या बड़े हों—अपने दलगत हितों को राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा अधिक महत्व देते हैं। इस तरह वे बड़े हित को हानि पहुँचा कर छोटे हित को लाभ पहुँचाने की कोशिश करते हैं। वे चुनाव में अपने उम्मीदवारों की सफलता के लिए उचित-अनुचित सभी साधनों का सहारा लेते हैं। वे अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए जातिवाद, क्षेत्रवाद, प्रान्तवाद आदि भावनाओं को प्रोत्साहित करते हैं। राजनैतिक दलों की ऐसी गतिविधियों से राष्ट्रीय ऐकीकरण के मार्ग में बाधा पैदा होती है।

कुछ राजनैतिक दल तो अखिल भारतीय स्तर पर स्थापित हैं किन्तु कुछ राजनैतिक दल राज्य-स्तर तक ही सीमित हैं। कुछ राज्यों में सेनाओं का भी संगठन हुआ है जैसे बंगाल में नक्सलवादी और महाराष्ट्र में शिव सेना। राज्य-स्तर के राजनैतिक दलों और सेनाओं के कार्यकलापों से भी राष्ट्रीय स्वार्थ को आघात पहुँचता है।

क्षेत्रवाद—क्षेत्रवाद या क्षेत्रीयवाद की भावना भी राष्ट्रीय एकीकरण के मार्ग में बाधक होती है। एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र के निवासी अपने को एक दूसरे के अधिक निकट समझते हैं। वे दूसरे भौगोलिक क्षेत्र के निवासियों से अपने को दूर समझते हैं और उनसे द्वेष करते हैं। उत्तर और दक्षिण के बीच भेदभाव इसी क्षेत्रीयवादी भावना का परिणाम है। दक्षिण में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो अपनी सभ्यता को द्राविड़ मानते हैं और उत्तरी भारत की सभ्यता को आर्य कहते हैं। इस तरह वे दोनों सभ्यताओं को परस्पर भिन्न समझते हैं। इस आधार पर वे द्राविड़ीस्तान के नाम से एक नवीन स्वतन्त्र राज्य की स्थापना चाहते हैं। डी० एम० के० के नेतृत्व में इसके लिये प्रयत्न भी किया गया है। डी० एम० के० मद्रास (तमिलनाडु) का एक राजनैतिक दल है। पंजाब में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो खालिस्तान की माँग करने लगे हैं। क्षेत्रीयवाद की यह प्रवृत्ति राष्ट्रीय एकता के लिए बहुत ही घातक है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली—देश में प्रचलित शिक्षा प्रणाली त्रुटिपूर्ण है। भारत को स्वतन्त्र हुए ३३ वर्ष हो गये किन्तु अभी तक शिक्षा के क्षेत्र में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं हुआ है। सरकार की नीति एवं उद्देश्य मूल रूप में ब्रिटिशकालीन परम्पराओं पर ही आधारित है। शिक्षा-जगत में अखिल भारतीय दृष्टिकोण का अभाव है। प्रचलित शिक्षा-पद्धति में अभी भी पश्चिमी साहित्य एवं अंग्रेजी भाषा के अध्ययन को अधिक महत्व दिया जाता है। अतः छात्र स्वार्थी एवं संकुचित हो जाते हैं। उनमें अखिल भारतीय दृष्टिकोण का समुचित विकास नहीं हो पाता है।

प्रतिवर्ष शिक्षितों की संख्या तो अवश्य ही बढ़ रही है किन्तु उस अनुपात में नौकरी नहीं मिल रही है। विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख उद्देश्य है नौकरी प्राप्त करना। लेकिन जब नौकरी नहीं मिलती है या मिली भी किन्तु मनलायक नौकरी नहीं मिली तो शिक्षित युवकों में बेकारी की समस्या पैदा होती है। वे निराश और असन्तुष्ट होते हैं। उनका भविष्य अन्धकारपूर्ण दिखाई पड़ता है। ऐसी स्थिति में प्रचलित व्यवस्था में उन्हें कोई श्रद्धा नहीं रह जाती। वे इसमें आमूल या क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिये ही बेचैन हो जाते हैं। बेकार शिक्षित नवयुवक अपनी जीविका के लिए अनुचित तथा असामाजिक साधनों का सहारा लेने लगते हैं। वे कोई भी दुष्कर्म करने के लिए तैयार हो जाते हैं। बंगाल के नक्सलपन्थियों में ऐसे ही बेकार शिक्षित युवकों की भरमार है।

अल्पसंख्यकों के साथ दुर्व्यवहार—कहीं-कहीं हिन्दू अधिक हैं और मुसलमान कम हैं किन्तु उनमें सच्चाई से भाईचारे का सम्बन्ध नहीं है। अतः कभी-कभी साम्प्रदायिक दंगे हो जाते हैं। हिन्दुओं में भी उच्चवर्ग के लोग निम्नवर्ग के लोगों के साथ खासकर हरिजनों और पिछड़े लोगों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं। मुसलमानों में भी शिया और सुन्नी में भाईचारे का सम्बन्ध धुंधला दिखाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पड़ता है। इस तरह वे भी कभी-कभी झगड़ पड़ते हैं। आसाम में बंगालियों का, पश्चिम बंगाल में मारवाड़ियों का और महाराष्ट्र में गुजरातियों के विरोध में आवाज उठायी जाने लगी है। अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों का जोर-जुल्म भी राष्ट्रीय एकीकरण में बाधक है।

छापाखाना—कभी-कभी कुछ छापाखाना (प्रेस) की नीति भी राष्ट्रीय एकता के लिए हानिकारक सिद्ध होती है। अधिकांश छापेखाने पूँजीपतियों के ही नियंत्रण में हैं। वे समाचारपत्रों के माध्यम से अपने ही स्वार्थों की पूर्ति के लिये सदा प्रयत्न करते हैं। वे अपने ही हितों में संकीर्ण एवं संकुचित भावनाओं को बढ़ावा देते हैं। यह प्रवृत्ति भी राष्ट्रीय एकता के लिये अहितकर है।

भारत का प्रत्येक नागरिक भारतीय है, हिन्दुस्तानी है, इंडियन है। यह राष्ट्रीयता का युग है। भारत की सीमा के अन्दर रहनेवाले सभी नागरिक एक राष्ट्र के हैं। उनमें छोटे-मोटे कुछ भेदभाव हैं किन्तु मूलत: वे एक हैं। पं० जवाहरलाल ने अपनी पुस्तक हिन्दुस्तान की कहानी में ठीक ही कहा है कि "विदेशों में हिन्दुस्तानियों का गिरोह एक अलग गिरोह समझा जाता है, और अपने भीतरी भेदों के बावजूद उन्हें एक गिना जाता है। हिन्दुस्तानी ईसाई चाहे जहाँ जाय हिन्दुस्तानी ही समझा जाता है, और हिन्दुस्तानी मुसलमान चाहे टर्की में हो, चाहे ईरान और अरब में, सभी मुसलमानी देशों वह हिन्दुस्तानी ही समझा जाता है।"

राष्ट्र की एकता के मार्ग में जो-जो बाधाएँ हैं उन्हें दूर करना होगा। भारत के इतिहास को पढ़ने से पता चलता है कि दो कारणों से इस देश पर विपत्ति आयी है। ये दो कारण हैं आपसी फूट और केन्द्रीय सरकार की कमजोरी। जब भी यहाँ के लोगों में मेल-जोल नहीं रहा, जब भी देश की राजधानी में सरकार कमजोर रही तभी इस देश पर बाहरी दुश्मनों के हमले हुए। यहाँ के लोगों की हार भी हुई अपनी ही कमजोरी के कारण, दुश्मनों की अधिक शक्ति

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

के कारण नहीं। यह ठीक ही कहा जाता है कि आन्तरिक कमजोरी और आन्तरिक दुश्मन बहुत खतरनाक होते हैं।

अपने देश और अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए आपसी एकता को मजबूत करना होगा। साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता, जातीयता और भाषावाद के दलदल में नहीं फँसना चाहिये। इनका सही अर्थ समझना चाहिये।

प्रत्येक नर-नारी को अपने देश के प्रति सच्चा रहने के लिये शपथ लेनी चाहिये। शपथ केवल मुख से नहीं, दिल से भी लेनी चाहिये। जो व्यक्ति केवल मुख से शपथ लेता है; दिल से नहीं लेता है वह पापी है, धोखाबाज है। वह अपने देश के प्रति विश्वासघात करता है। यदि वह अवने विचार या कार्य से अपने देश को नुकसान पहुँचाता है तो उसे कठोर दंड देना चाहिये। संसार के कई देशों में देशद्रोही को तो शीघ्र ही प्राण-दंड दे दिया जाता है। फल से भरी हुई टोकरी में एक सड़ा फल दूसरे फलों को भी खराब कर देता है। इसलिये सड़े फल को टोकरी से निकान कर जल्द ही बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसे ही देश के अन्दर यदि एक भी देशद्रोही हो तो वह अपने बुरे प्रभाव से दूसरे देशवासियों को भी खराब कर सकता है। इसलिये उस देशद्रोही को जल्द से जल्द पकड़ कर कैदखाने में बन्द कर देना चाहिये या उसे कठोर से कठोर दंड दे देना चाहिये।

अपने देश या राष्ट्र की रक्षा के लिये नागरिकों को अपने स्वार्थों पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये। राष्ट्र सुरक्षित है तो नागरिक भी सुरक्षित हैं। अतः जब भी राष्ट्र पर किसी प्रकार का संकट आवे तो सभी नागरिकों को चाहिये कि वे आपसी मतभेदों और संकीर्ण भक्तियों को भूल जायँ। चाहे कोई असम का हो या पूर्वी पंजाब का, चाहे नैनीताल का हो या केरल का—सभी एक साथ मिलकर उस संकट का सामना करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एक समय की बात है कि स्पेन ने एक बार (१५८८ ईसवी) इंगलैंड पर हमला किया। स्पेन कैथोलिक धर्म मानता था। इंगलैंड तो प्रोटेस्टेंट धर्म मानता था किन्तु वहाँ कैथोलिक लोग भी थे। लेकिन धर्म के आधार पर इंगलैंड के कैथोलिकों ने भी स्पेन का साथ नहीं दिया। अंगरेज कैथोलिकों ने भी अपने प्रोटेस्टेंट भाइयों के साथ मिलकर स्पेन का ही विरोध किया। स्पेन को हार कर भागना पड़ा। अपने देश की रक्षा करना सबसे बड़ा धर्म है। देश के सुरक्षित रहने पर ही हम किसी धर्म का पालन कर सकते हैं या कोई काम कर सकते हैं।

कहा जाता है कि जननी (माता) और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक बड़ी हैं। अतः जननी और जन्मभूमि के हित के लिये सन्तानों में त्याग और बलिदान की भावना होनी चाहिये। जन्मभूमि जननी से भी बड़ी है। जननी तो अपने शरीर से ही सन्तानों को पैदा करती है। लेकिन जन्मभूमि (देश) जननी और उसकी सन्तानों सब का पालन-पोषण करती है। इस तरह भारत माताओं की भी माता है। अतः भारतमाता की प्रत्येक सन्तान का पवित्र कर्त्तव्य है कि वह अपनी माता की भलाई के लिये अपनी जान भी देने के लिये सदा तैयार रहे। जो अपने देश के लिये मरता है वह पुण्य का काम करता है और अमर बन जाता है। ठीक ही कहा गया है कि

देश के यज्ञ में जो प्राण दिया करते हैं।
पुण्य करते हैं वे, मरकर भी जिया करते हैं॥

इतना ही नहीं, जो देश के लिये मरता है उसकी समाधि का लोग दर्शन करते हैं। उसके पास मेला लगने लगता है। कवि कहता है कि "शहीदों के मजार (समाधि) पर लगेंगे हर बरस मेले।" जब देश-भक्त अपने देश के लिये मरने के लिये जाने लगता है तो लोग उस पर फूलों की वर्षा करते हैं, उसे मालाएँ पहना कर विदाई देते हैं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इस प्रकार भारतमाता की सभी सन्तानों को दिल और दिमाग दोनों से अच्छी तरह समझना चाहिए कि हमारा देश या राष्ट्र एक है और एक रहेगा। हम सब एक हैं। और एक रहेंगे। भारतमाता की रक्षा के लिए हम एक-एक करके मर मिटेंगे। संसार को समझना और देखना चाहिए कि भारत एक राष्ट्र है और उसका हृदय भी एक है।

स्वतंत्र भारत के जो कर्णधार हैं वे देश की राष्ट्रीय एकता की समस्या से भलीभाँति परिचित हैं ऐसे तो संविधान में ही देश की एकता कायम रखने के लिये व्यवस्था की गई है। समस्त देश में एक ही संविधान लागू किया गया है। उस संविधान में केन्द्र को शक्ति-शाली बनाया गया है। अखिल भारतीय सेवाओं का भी निर्माण हुआ है; जैसे भारतीय प्रशासन सेवा (आई. ए. एस.), भारतीय पुलिस-सेवा (आई. पी. एस.)। सारे देश के लिए एक ही नागरिकता है। अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा पर बहुत जोर दिया गया है।

एकता के पक्ष को सबल बनाने के लिए अन्य प्रयत्न भी हुए हैं। अक्टूबर १६६१ ई. में दिल्ली में एक राष्ट्रीय एकता सम्मेलन बुलाया गया। प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इसकी अध्यक्षता की थी। इसमें देश के सभी भागों और विभिन्न दलों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। इसमें भावात्मक एकता के सम्बन्ध में गंभीरतापूर्वक विचार-विमर्श हुआ था।

एकता को प्रोत्साहन देने के लिए दो समितियों का संगठन हुआ। एक समिति के अध्यक्ष थे डा. सम्पूर्णानन्द और दूसरे के श्री अशोक मेहता। समय-समय पर देश में एकता सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। जून १६६८ ई. में भी दिल्ली में एकता सम्मेलन किया गया था। शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में एकता को बढ़ावा देने के लिए जोर दिया गया है। महात्मा गांधी के जन्म दिवस २ अक्टूबर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने का निश्चय हुआ है। इस दिन नागरिकों के लिए निम्नलिखित शपथ लेने के लिये निर्धारित की गई है —

"मैं राष्ट्रीय आजादी और राष्ट्रीय एकता को सुरक्षित एवं सुदृढ़ बनाने के लिए निष्ठा के साथ काम करने की शपथ लेता हूँ। मैं इस बात का वचन देता हूँ कि मैं कभी किसी प्रकार का हिंसात्मक कार्य नहीं करूँगा और धर्मगत, भाषागत, क्षेत्रीय तथा अन्य राजनैतिक अथवा आर्थिक असंतोष से सम्बन्धित मतभेदों और झगड़ों को शांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीकों से हल किए जाने का समर्थन करता हूँ।"

इस प्रकार आज देश में सबसे बड़ी आवश्यकता है राष्ट्रीय या भावात्मक एकता की। समय की जोरदार मांग है, भारतमाता की कारुणिक पुकार है कि उनकी सभी सन्तानें एकता के सवल सूत्र में बँध जायँ। एक बार डा. राजेन्द्रप्रसाद ने केरल में भाषण करते हुए (१ फरवरी १९५६) राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास पर बहुत जोर दिया था। उनका कहना था कि भारतीयों को राष्ट्रीय एकता के प्रति मन, वचन और कर्म से सजग तथा सावधान रहना चाहिये। देश को सर्वोपरि समझना चाहिये। यदि ऐसे विचार का विकास नहीं होगा तो स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र दोनों का अन्त हो जायगा। देश के सुरक्षित रहने से राज्य जो देश की इकाई है, सुरक्षित रहेंगे किन्तु देश के सुरक्षित नहीं रहने से राज्य भी सुरक्षित नहीं रहेंगे। राज्य यदि सुरक्षित भी रहे तो उनसे देश की सुरक्षा नहीं हो सकती।

राज्य तो शरीररूपी देश के विभिन्न अंग हैं—टुकड़े हैं। पूरे शरीर के ठीक रहने से उसके अंग भी ठीक रहेंगे। यदि सम्पूर्ण ठीक है तो टुकड़े भी ठीक हैं, संपूर्ण ठीक नहीं है तो टुकड़े भी ठीक नहीं रह सकते।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रेल, जहाज, हवाई जहाज आदि बड़ी-बड़ी सवारियों में सभी वर्गों, सभी जातियों, सभी धर्मों तथा सभी भाषाओं के लोग एक साथ यात्रा करते हैं। किसी को कहीं कोई दिक्कत या कठिनाई नहीं होती है। एक देश में भी कई वर्गों, जातियों, धर्मों और भाषाओं के लोग बिना किसी कठिनाई के एक साथ रह सकते हैं। देश या दुनिया भी तो एक धर्मशाला है—एक सराय है जहाँ सभी लोग कुछ समय के लिये अतिथि हैं। तो फिर आपस में मतभेद क्यों ? लड़ाई-झगड़ा क्यों ? सबको आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिये क्योंकि सभी को कुछ निश्चित अवधि के बाद यह धर्मशाला—यह सराय छोड़कर दूसरी दुनिया में जाना पड़ता है।

भावात्मक एकता पैदा करने में शिक्षा और शिक्षकों का महत्वपूर्ण स्थान है। देश की शिक्षा-प्रणाली में भावात्मक एकता को प्रमुख स्थान मिलना चाहिये। प्राथमिक स्तर से ही इस प्रवृत्ति को प्रमुखता मिलनी चाहिये। पाठ्य-पुस्तकों की रचना में लेखकों को इस संबन्ध में पूरा सतर्क रहना चाहिये। जिस पुस्तक के अध्ययन से अलगाव जैसी दूषित भावना को प्रोत्साहन मिलता हो उसके प्रचार और अध्ययन पर जल्द से जल्द प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये। कवियों को भी अपनी कविताओं के माध्यम से भावात्मक एकता की भावना के विकास में सहयोग देना चाहिये।

प्रभावकारी राष्ट्रीय एकीकरण के लिये निम्नलिखित कुछ अन्य रचनात्मक सुझाव भी प्रस्तुत किये जाते हैं :—

१. **आर्थिक विषमता में कमी**—स्वतन्त्रता प्राप्ति के ३२ वर्ष हो चुके किन्तु अभी भी धनी और गरीब के बीच की खाईं कोई खास तौर पर कम नहीं हुयी है। इस खाईं को पाटना या कम करना आवश्यक है। धन का ऐसा वितरण किया जाय कि यह थोड़े से परिवारों या व्यक्तियों के हाथ में केन्द्रित न हो। उत्पादन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

क्षेत्र में श्रमिकों को उचित पारिश्रमिक दिया जाय। अमीर-वर्ग के लोग गरीबों से घृणा न करें। उनके साथ सहानुभूतिपूर्वक बर्ताव करें।

२. राजनैतिक दलों का उच्च नैतिक स्तर—यह नितान्त आवश्यक है कि राजनैतिक दलों के लिये चरित्र-विधान बनाया जाय। कोई भी राजनीतिज्ञ, चाहे वह किसी भी राजनैतिक दल का हो, अपने चरित्र को उत्तम बनावे ताकि उसका नैतिक स्तर ऊपर उठ सके। चुनाव में वह सफल हो या न हो, उसके दल को बहुमत मिले या न मिले, वह अनुचित साधनों का सहारा न ले। वह संकीर्ण भावनाओं को प्रोत्साहन न दे। जो ऐसा करे उसे दल की सदस्यता से वंचित कर दिया जाय।

३. शिक्षा-प्रणाली में सुधार—प्रचलित शिक्षा-प्रणाली में मौलिक सुधार आवश्यक है। विश्वविद्यालयों में छात्रों की संख्या सीमित की जाय। तकनीकी एवं प्राविधिक शिक्षा का विस्तार किया जाय। देश के विभिन्न भागों में छात्रों और प्राध्यापकों का आदान-प्रदान किया जाय।

४. भारत भ्रमण की सुविधा—भारत के किसी भी भाग में नागरिकों को आने-जाने की पूरी सुविधा प्राप्त हो।

५. अल्पसंख्यकों के साथ सद्व्यवहार—भारत के जिस भाग में चाहे जिसका बहुमत हो, बहुसंख्यक अल्पसंख्यकों के साथ सद्व्यवहार करें। हिन्दू मुसलमानों के प्रति, उच्चवर्ग के हिन्दू निम्न-वर्ग के हिन्दुओं के प्रति, शिया सुन्नी के प्रति और सुन्नी शिया के प्रति परस्पर प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रखें। अल्पसंख्यकों को भी बहुसंख्यकों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखना चाहिये।

६. प्रेस की सही नीति—छापाखाने की नीति एवं उद्देश्य सही होना चाहिए, उन्हें भी अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए संकुचित भाव-

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नाओं को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। विघटनकारी और असामाजिक तत्वों की कटु शब्दों में घोर निन्दा करनी चाहिए।

७. **केन्द्र की निष्पक्षता**—भारत सरकार को किसी भी राज्य के साथ किसी भी दृष्टि से पक्षपात नहीं करना चाहिए। सभी राज्यों और सभी नागरिकों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करना चाहिए। देश के सभी लोगों या उनके प्रतिनिधियों को देश के विकास एवं शासन में भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए।

८. **एक अन्य भाषा का अध्ययन**—अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त देश की किसी एक अन्य भाषा का भी अध्ययन होना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में इस पर समुचित ध्यान देना चाहिए। एक भाषा के साहित्य का दूसरी भाषा में अनुवाद कराना चाहिए।

९. **सर्वसाधारण में एकता का प्रचार**—सर्वसाधारण में राष्ट्रीय एकता के प्रचार के लिए रेडियो और सिनेमा का विशेष उपयोग करना चाहिए। प्रदर्शनियों का भी आयोजन होना चाहिये। इस तरह एकता के पक्ष में शक्तिशाली लोकमत का निर्माण होगा।

१०. **संगोष्ठियों का आयोजन**—समय-समय पर राज्य और केन्द्रीय स्तर पर संगोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन करना चाहिये। इनमें राष्ट्रीय स्तर के उच्चकोटि के चरित्र वाले व्यक्तियों का भाषण होना चाहिये। भाषण में एकता के लाभों और फूट से उत्पन्न हानियों पर प्रकाश डालना होगा।

११. **सहिष्णुता**—भारत के प्रत्येक नागरिक को सहिष्णु होना चाहिये। कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है। हर व्यक्ति में गुण और दोष पाये जाते हैं। हाँ, किसी में गुण अधिक हो सकते हैं तो किसी में दोष की मात्रा अधिक हो सकती है। अतः यदि कोई व्यक्ति कोई गलती करता है तो इसे बर्दाश्त करना चाहिए। गलती का जवाब गलती से, भूल का जवाब भूल से नहीं देना चाहिये। जो गलती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

करता है या जो भूल करता है उसे क्षमा प्रदान करनी चाहिये। यदि मनुष्य, मनुष्य की गलती को क्षमा नहीं करेगा तो फिर ईश्वर भूल के लिये मनुष्य को कैसे क्षमा प्रदान कर सकता है। इस तरह यदि कोई किसी के कपड़े पर कीचड़ फेंक देता है तो स्वच्छ जल से कपड़े को धो लेना चाहिए। इसके बदले में दूसरे के कपड़े पर कीचड़ नहीं फेंकना चाहिए। ऐसे ही गाली का जवाब गाली से नहीं देना चाहिए। इसका कहीं अन्त नहीं होगा—सम्बन्ध कटु होगा। गाली देनेवाले को समझा देना चाहिए और इसे सह लेना चाहिए।

एक बार बुद्ध को किसी ने गाली दी। बुद्ध ने हँसते हुए कहा- "बेटा, तुम्हारी दी हुई चीज को मैं नहीं ले रहा हूँ, तुम उसे अपने ही पास रखो।" यह कहकर बुद्ध चले गये किन्तु गाली देनेवाला बड़ा लज्जित हुआ और पश्चात्ताप करने लगा। इस तरह हम छोटों को बुद्ध और गाँधी जैसे बड़ों से कुछ शिक्षा तो ग्रहण करनी चाहिये।

१९७० ई० में श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में आपसी मेलजोल बढ़ाने के लिये इन्सानी बिरादरी का गठन किया गया। उसी साल श्रीमती सुभद्रा जोशी के नेतृत्व में अखिल भारतीय साम्प्रदायिकता विरोधी समिति का गठन हुआ। इस समिति ने १९७४ ई० में साम्प्रदायिक संगठनों पर कानूनी प्रतिबन्ध लगा देने के लिये उपयुक्त सुझाव दिया। एक राष्ट्रीय एकता परिषद् की भी स्थापना हुई हैं। समय-समय पर इसकी बैठक होती है और भावात्मक एकता को सशक्त बनाने के लिये इसमें विचार-विमर्श होता हैं।

इस तरह यदि देश के नागरिकों में एकता रहेगी—सद्भावना रहेगी तो देश आगे बढ़ेगा। यदि उनमें एकता का अभाव रहेगा—परस्पर दुर्भावना रहेगी तो देश पीछे की ओर जायगा। महात्मा तुलसीदास ने बहुत ठीक ही कहा है कि—

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना।
जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति बखाना ॥

एक बात और उल्लेखनीय है। एक बार युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से पूछा कि गणों (समूहों या समुदायों) का पतन क्यों होता है और कैसे उनकी रक्षा हो सकती है ? भीष्म पितामह ने कहा कि गणों का पतन उनमें फूट के कारण होता है। फूट के ही कारण वे दुश्मनों द्वारा आसानी से जीत लिये जाते हैं। अपनी रक्षा के लिये गणों को एक संघ में संगठित होकर रहना चाहिये। महाभारत के शान्ति पर्व में इस बात का उल्लेख मिलता है। भीष्म पितामह की वाणी आज के भारतीयों के लिये चेतावनी के रूप में महत्वपूर्ण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

lath, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लेखक की अन्य रचनाएँ

१. दुनिया की कहानी—२ भाग (पुरस्कृत)

२. इतिहास की प्रमुख धाराएँ—२ भाग

३. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास—२ भाग (प्रारम्भ से १९३९ ई०)

४. ग्रेट ब्रिटेन का संवैधानिक इतिहास

५. भारत का इतिहास—५ भाग (प्रारम्भ से १९४७ ई०)

६. भारत की स्वाधीनता की कहानी

७. महान् अशोक

८. बाबा साहब अम्बेदकर

९. National, Social Reform and Indian Women 1921-37 (Thesis)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao